Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भाग्योदय

श्री लक्ष्मीनारायण साधना रहस्य



कौशल-बंसल

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



सर्वसिद्धी माँ बगलामुखी

नलखेड़ा जिलां- शाजापुर (म. प्र.)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ ह्रीं बगलामुख्यै नमः

भाग्योदय

श्री लक्ष्मीनारायण साधना रहस्य

समृद्धि, सुख, शांति एवं धन-वृद्धि
का वैज्ञानिक आधार

समीक्षार्थ
कृपया प्रकाशित करें, प्रति एवं अपने
विचार भेजने का कष्ट करें।

लेखक
कौशल बंसल

कौशल बंसल
डिप्टी कलेक्टर

प्रकाशक
भाग्योदय अनुसंधान केन्द्र ☎ 2340749
६६, जवाहर मार्ग, नन्दलालपुरा चौराहा,
इन्दौर-४५२ ००४
☎ ४७१९६१, ४६६१४१

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्राप्ति स्थान

- **अरिहन्त इन्टरनेशनल**
  २३९, गली कुजसदरिबा,
  देहली-११०००६
  ☎ ३२७८७६१

- **कमल प्रकाशन**
  ५४, प्रिंस यशवंत रोड,
  इन्दौर-४५२००४
  ☎ ४३१५६६

- **सिद्ध पीठ चण्डी धाम**
  गांधी नगर
  ललितपुर (उ. प्र.)

- © शोभा बंसल

- मूल्य : रु. २०/-

प्रथम संस्करण : अगस्त, १९९७
द्वितीय संस्करण : अक्टूबर १९९७
तितीय संस्करण : फरवरी १९९८

- प्रकाशन : **श्रीमती शोभा बंसल**
  भाग्योदय अनुसंधान केन्द्र, इन्दौर
  ☎ ५१९७०६

- टाइप सेटिंग : **वैभव ग्राफिक्स**
  ६२२, खजूरी बाजार, इन्दौर
  ☎ ४५२६१३, ४५४८००

- मुद्रक : **आदर्श ग्राफिक्स**
  ८१, बीमानगर, आनंद बाजार,
  ☎ ५६१४१८

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

समर्पण

परम पूज्य पिता स्वर्गीय श्री मधुसूदनलालजी अग्रवाल तथा प.पू. गुरु स्वर्गीय श्री श्यामानन्दजी परमार्थ आश्रम, हरिद्वार के कर कमलों में, जन साधारण के भाग्योदय में वृद्धि करने वाली यह कृति सादर समर्पित। जिनके श्रीचरणों में बैठकर इस अकिंचन ने अध्यात्म, श्री माँ बगलामुखी उपासना, भक्ति, ज्ञान, तंत्र-मंत्र, हस्त, अंक विज्ञान आदि गूढ़ विषयों की शिक्षा प्राप्त की व जिनके आशीर्वाद से माँ की शरण प्राप्त हुई।

कौशल बंसल

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection .

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भूमिका

या सा पद्मासनस्था विपुल कटि तटी पद्मपत्रायताक्षी,
गम्भीरा वर्तनाभिः स्तनभरनमिता शुभ्र वस्त्रोत्तरीया।

या लक्ष्मी दिंव्यरूपै र्मणि गण खचितैः स्नापिता हेमकुम्भैः,
सा नित्यं पद्महस्ता मम वसतु गृहे सर्व माङ्गल्ययुक्ता॥

नित्यैवैषा जगन्माता विष्णोः श्रीरनपायिनी
यथा सर्वगतो विष्णुस्तथैवेयं द्विजोत्तम।

अखिल विश्व के सृजनकर्ता नारायण के साथ आदि शक्ति श्री महालक्ष्मी का संयुक्त रूप प्रकृति जन्य हैं। लेकिन लक्ष्मी उपासकों को एक अनुभव गम्य साधना पथ दिखाना श्री कौशल बंसल जी का अपना अनुभव ज्ञान है। आप पेशे से अधिकारी होकर आपने आधुनिक समाज में रहते हुए हमारी सनातनी संस्कृति के प्रति जागरुक होकर जो प्रयास किया है, सराहनीय है। वैसे आमतौर पर मानव लक्ष्मी की उपासना श्री गणेश के साथ करते हैं। लेकिन लेखक का तर्क है कि यदि लक्ष्मी की उपासना श्री विष्णु के सहित की जाए तो लक्ष्मी शीघ्र प्रसन्न होगी एवम् स्वयं लक्ष्मी अपने पति से संयुक्त रहेगी। लेखक का तर्क शास्त्र संमत है। लेखक की साधना उनका अपना अनुभव है। अनुभव ज्ञान ही श्रेष्ठ है, अपेक्षा पुस्तकीय ज्ञान से। हम लेखक के प्रयास एवं साधना से प्रभावित हैं।

माँ महालक्ष्मी एवं श्री विष्णु की ही असीम कृपा के फलस्वरूप एक साधारण व्यक्ति द्वारा यह अद्वितीय प्रयास कर स्थिर लक्ष्मी प्राप्ति का साधना-पथ लिपिबद्ध किया गया। महालक्ष्मी का हर घर में चिरस्थायी वास हो। मेरा शुभ आशिर्वाद।

सिद्ध पीठ चण्डीधाम
गांधीनगर
ललितपुर (उ.प्र.)

बाबा गोपेश्वर गिरि
"साहित्य रत्न"
तंत्र विशारद
तांत्रिक योगी, चण्डी पीठाधीश्वर

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भूमिका

श्रीमन्नारायण अगणित गुणगणों के भण्डार हैं। लक्ष्मी जी के साथ इन गुणगणों में **गुणात्मक** रूप से वृद्धि हो जाती है। लक्ष्मी-नारायण की पूजा-अर्चना से तो धन-वैभव, ऋद्धि-सिद्धि आदि क्या नहीं सुलभ हो पाता? परम्परानुसार अधिकांशतः लक्ष्मी-गणेश पूजा का ही विधान है। मेरे परम स्नेही श्री कौशल बंसल जी ने इस दिशा में प्रशंसनीय कार्य किया है। लक्ष्मी-नारायण स्वरूप इस ग्रंथ के साथ-साथ इन्होंने लक्ष्मी-नारायण यंत्र निर्मित किए हैं जिनको पूजा स्थल में रखने और नित्य इनका दर्शन करने मात्र से ही आनन्द की अनुभूति होती है।

आप नलखेड़ा स्थित माँ बगलामुखी के अनन्य भक्त हैं। इस पावन और सिद्ध स्थान के जीर्णोद्धार के लिए आपने जो कुछ किया है— कर रहे हैं, वह सर्वविदित है। आप साधुवाद के पात्र हैं।

भगवत्कृपा से जहां आप एक उच्च अधिकारी हैं, वहाँ प्रखर लेखनी के भी धनी हैं। प्रस्तुत ग्रंथ इसका उदाहरण है। यह आस्तिक समाज के लिए निश्चय ही ईश्वरीय देन सिद्ध होगा। ग्रंथ स्वयमेव अपनी भूमिका आप है। जब सुधी पाठक पढ़ेंगे तो पाएंगे कि लेखक सरल, सरस भाषा शैली के धनी हैं। लक्ष्मी, लक्ष्मी वाहन आदि अन्धविश्वास सी दिखने वाली बातों का वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक आधार पर विश्लेषण एवं प्रस्तुति सारगर्भित सिद्ध होगी। ऐसी प्रस्तुति अब तक अछूती थी।

अन्ततः मैं मंगलानुशासनपूर्वक अभिनन्दन करता हूँ और श्री मन्नारायण जी से प्रार्थना करता हूँ कि वे धर्म सेवा में लिप्त सादगी, संयम और साधुता के प्रतीक धर्मसेवक को अधिकाधिक शक्ति प्रदान करें।

विक्रम सम्वत् २०७४

गोपाल राजू
सम्पादक 'भारतीय अनन्त दर्शन'
ज्योतिष अनुसंधान केन्द्र (रजि.)
३०-सिविल लाइन्स
रुड़की-२४७ ६६७ (उ.प्र.)
दूरभाष : (०१३३२) ७४३७०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दो- शब्द

एक ऐसे अग्रवाल घराने में मेरा जन्म हुआ, जिसका पुश्तैनी धन्धा था - कपड़े का व्यापार। मैं सन् १९७७ से मध्यप्रदेश शासन की कनिष्ठ प्रशासनिक सेवा से जुड़ा हूँ। सन् १९८९ में तहसील नलखेड़ा जिला शाजापुर में नायब तहसीलदार के पद पर पदस्थ हुआ। बस यहीं से "माँ बगलामुखी" की कृपा से पूर्वजन्म के संस्कारों की प्रबलता ने मुझे तंत्र, मंत्र, यंत्र, हस्त विज्ञान, अंक विज्ञान आदि के प्रति लगाव पैदा किया। पुस्तक लेखन कोई मेरा पेशा नहीं है साथ ही न मैं कोई तांत्रिक हूँ और न ही किसी का कष्ट दूर करने की असाधारण क्षमता मुझमें है। मानव जीवन को सुखी बनाने के लिए हमारे पूर्वाचार्यों ने जो उपचार बताये हैं, उनकी सामान्य विधि बताना ही मेरा उद्देश्य है।

मेरा अध्ययन जब कुछ विकसित हुआ, मैंने इस विषय से संबंधित साहित्य, जो भी मुझे मिल सका, अध्ययन करना प्रारम्भ किया और इस अध्ययन से उठी शंकाओं का समाधान परम पूजनीय गुरु महाराज स्वर्गीय श्री श्यामानन्दजी श्री परमार्थ आश्रम, हरिद्वार, परम पूजनीय गुरुजी तांत्रिक बाबा श्री गोपेश्वरजी गिरि, ललितपुर, माननीय श्री गोपाल राजूजी, तांत्रिक एवं ज्योतिषाचार्य, रुड़की, डॉ. वत्सराज, सोनीपत आदि से करता रहा और मार्गदर्शन प्राप्त करता रहा।

मेरे मन को इस बात ने सचमुच चमत्कृत कर डाला कि भारतीय विद्वानों, ऋषियों, मुनियों आदि ने मानव जीवन के कल्याण के लिये और उसे सुखी, समृद्ध बनाने के लिए अनेकों प्रयत्न किये। मंत्र, तंत्र एवं यंत्र भी उसी के विभिन्न पहलू हैं। इनके आविष्कार, साधनाओं व विकास के लिये लगन के साथ उन्होंने जो कुछ किया, वह उन प्रयत्नों की श्रृंखला में एक महत्वपूर्ण कड़ी है।

भारत से अद्भुत विद्याएँ, कलाएँ विदेशों में तरंगित हुईं। भारतीय संस्कृति, दर्शन आदि से विश्व के अग्रगण्य देश प्रभावित हुए। भारत अपने जिन तथ्यों को पुराने, दकियानूसी, असम्भव व कपोल-कल्पित मानकर छोड़ रहा था, आधुनिक एवं पाश्चात्य जगत् ने उनमें आश्चर्यजनक अभिरुचि ली तो नये सिरे से आज उनका प्रचार-प्रसार भारत में भी होने लगा है। अब पश्चिमी दुनिया की नवीनतम अभिरुचि भारत की जिस विद्या में होने लगी है, वह है - मंत्र, तंत्र एवं यंत्र विज्ञान। ब्रह्म-विद्या सम्बन्धी तथ्य अब कपोल-कल्पित नहीं माने जा सकते, इसकी सीमाओं की खोज गहरी निष्ठा के साथ की जा रही है। मास्को स्थित प्राच्य अध्ययन संस्थान में डॉ. गेरासिमोव की देख-रेख में "ज्ञान की तांत्रिकी शाखा" में गम्भीर अध्ययन एवं शोध किए जा रहे हैं। अमरीकी विश्वविद्यालयों में भी ब्रह्म-विज्ञान आदि के विभाग खोले जा रहे हैं। पश्चिमी जर्मनी में तो आज अच्छे तांत्रिक एवं योगी मिल जायेंगे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मैं इससे इन्कार नहीं करता कि मन्त्र, तन्त्र एवं यन्त्र के नाम से प्रवंचना, छल और कपट भी खूब चल रहा है। स्वार्थी लोगों ने जिन्हें वास्तव में मंत्रों का न कोई ज्ञान है और नहीं साधना का, भोले-भाले लोगों को खूब चकमा दिया है और आज भी दे रहे हैं। इसी से लोगों में इसके प्रति अश्रद्धा पनपी है। इसका एक प्रमुख कारण है - हमारा स्वार्थ, अपनी ही सर्वोच्चता बनाए रखने का दर्प तथा इन्हें स्वयं पचाकर एवं सुलभ न करवाने का छल। इस प्रकार अर्थलोलुप, स्वार्थान्ध लोगों ने हमारे देश की विद्या की गरिमा और महिमा को बहुत नष्ट किया है, करते आ रहे हैं। यह बड़ा जघन्य और निकृष्ट कार्य है।

आज के अस्त-व्यस्त जीवन में सभी यह चाहते हैं कि गुरु-परम्परा के ज्ञान, उनसे दीक्षा प्राप्त करना, उनके द्वारा बतलाये विधान के अनुसार पुरश्चरण से पूजा-अर्चना करना आदि एक कठिन कार्य है, इससे मुक्त रहते हुए कुछ सरल साधन उपलब्ध हों, इसी सोच के साथ माँ बगलामुखी की कृपा से सुख, धन, समृद्धि प्राप्त करने हेतु श्री लक्ष्मी-नारायण मंत्र एवं यंत्र पूजा का विधान समाज के जन-साधारण के लिए लिखने का प्रयास किया है। मेरा अटूट विश्वास है कि लोग श्री महालक्ष्मी को उनके पति श्री विष्णुजी के साथ पूजकर अपना सम्पूर्ण भाग्योदय कर सकते हैं।

पुस्तक के अध्ययन, अवलोकनोपरांत ज्ञात भूलों की सूचनाओं, प्रयोगों के परिणामों, विधियों में संशोधनों तथा मौलिक सुझावों, मार्गदर्शन के लिए विद्वानों तथा सहृदय पाठकों के प्रति सदैव हार्दिक आभारी रहूँगा।

पुस्तक के प्रस्तुतीकरण एवं प्रकाशन में मेरे प्रमुख प्रेरणास्रोत रहे मेरे प.पू. गुरुजी बाबा गोपेश्वरजी गिरि, ललितपुर, श्री गोपाल राजू - तांत्रिक, रुड़की, श्री प्रदीप ऐरन, श्री डॉ. बी.एल. अग्रवाल भोपाल, श्री विजयसिंह पवार, पुलिस इन्सपेक्टर, प.पू.पं. रमादत्तजी शुक्ल, चण्डी कार्यालय, इलाहाबाद, डॉ. भोजराजजी द्विवेदी, ज्योतिषाचार्य, जोधपुर, श्री मुरलीधर भम्बोरे, इन्दौर, श्री गंगाराम शास्त्री, अध्यक्ष, संस्कृत साहित्य सम्मेलन, भोपाल, मुनि ऋषभचंद विजय 'विद्यार्थी', मोहन खेड़ा तीर्थ, डॉ. सी. वत्सराज, नरकेसरी, सोनीपत, माँ बगलामुखी भक्त श्री युसुफ अली कुरेशी मास्टर , महू, श्री कुन्जीलाल गोयल, अध्यक्ष- अग्रवाल समाज, इन्दौर, श्री समरजीतसिंह चौहान - अभिभाषक, श्री सज्जनसिंह वर्मा, पूर्व विधायक, इन्दौर, जिनका उत्साह मुझे निरन्तर बल प्रदान करता रहा। मैं उनके प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

इसकी पांडुलिपि के सम्पादन में मेरे अभिन्न मित्र श्री कमल मेड़तिया, कमल प्रकाशन, इन्दौर, सुरेश बिन्दल, सम्पादक-अग्रसेन पत्रिका, इन्दौर, श्री ए.के. मिश्रा, डिप्टी कलेक्टर एवं श्री ज़ियाउद्दीन भाई का मुझे मूल्यवान सहयोग प्राप्त हुआ, एतदर्थ मैं इन सभी के प्रति अपना आभार प्रकट करता हूँ।

कौशल बंसल, इन्दौर

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अनुक्रम

1.	श्री लक्ष्मी नारायण साधना रहस्य	1
2.	लक्ष्मीजी की कृपा	1
3.	समृद्धि और धन प्राप्ति का रहस्य	2
4.	श्री लक्ष्मी एवं श्री गणेश	4
5.	श्री लक्ष्मी और श्री विष्णु की एकरूपता	5
6.	भगवान विष्णु – स्वरूप एवं ध्यान	6
7.	भगवती महालक्ष्मी	10
8.	दीपावली पर लक्ष्मी पूजन क्यों होता है ?	12
9.	श्री लक्ष्मीनारायण यंत्र	13
10.	यंत्र क्या है ?	14
11.	तंत्रोक्त लक्ष्मी–विष्णु साधना	15
12.	मंत्र–यंत्र विधि क्रम	17
13.	माला में 108 दाने क्यों ? अंक 9 का महत्व क्या ?	22
14.	मन्त्रार्थ	24
15.	श्री लक्ष्मीनारायण तन्त्रोक साधना	30
16.	श्री लक्ष्मीनारायण चतुर्दशाक्षर मंत्र	30
17.	श्री हरि–हर षोडशाक्षर मंत्र	31

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

18.	द्वादशाक्षर मंत्र	31
19.	श्री महालक्ष्मी–मंत्र	31
20.	श्री विष्णु – मंत्र	32
21.	सप्त–विंशाक्षर महालक्ष्मी–मंत्र	32
22.	अष्टा–विंशाक्षर महालक्ष्मी–मंत्र	33
23.	चिरस्थाई विपुल लक्ष्मी प्राप्त करने का मार्ग	33
24.	अन्य मंत्र	33
25.	आरती का महत्व	34
26.	श्री विष्णु वन्दना	36
27.	श्री लक्ष्मी वन्दना	36
28.	श्री लक्ष्मीनारायण की आरती	36
29.	आरती पश्चात् प्रार्थना	37
30.	पुष्पाञ्जलि	38
31.	सन्दर्भ ग्रन्थ सूची	38

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ ह्रीं बगलामुख्यै नमः

समृद्धि, सुख, शांति एवं धन प्राप्ति का वैज्ञानिक आधार

श्री लक्ष्मीनारायण साधना रहस्य

प्रत्येक मनुष्य के मन में सम्पन्न-समृद्ध होने की इच्छा होती है, किन्तु केवल इच्छा मात्र से ही समृद्धि कहाँ मिलती है? धन की उत्पत्ति, उपभोग, उपयोग, वृद्धि का अपना दर्शन एवं विज्ञान है। इसी दर्शन और विज्ञान के कुछ मूल अकाट्य तथ्यों को श्री लक्ष्मी एवं विष्णुजी के दिव्य स्वरूप में खोजने की चेष्टा की है।

जनसाधारण के लिए इसमें सुख-शांति, समृद्धि, आदि हेतु साधना विधि दी गई है।

तंत्र शास्त्र के अनुसार श्री लक्ष्मीजी दस महाविद्याओं में एक महाविद्या कही जाती हैं। इनके ही नाम कमला, श्रीविष्णुप्रिया आदि हैं। ये सदा शिव-विष्णु की शक्ति हैं, जो परमाकाश में विराजती हैं। ये ही विश्व की स्थिति शक्ति हैं। इनके द्वारा ही विश्व का पालन होता है। इसलिए इनको "विष्णु-शक्ति" भी कहा जाता है।

अनिश्चित गतिवाली काल-शक्ति की ही कल्पना पुराणों में "शेष नाग" के रूप में की गई है। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष — ये 'विष्णु' के चार हाथ हैं। "प्रवृत्ति" और "निवृत्ति" उसके पाद हैं। चतुर्दश भुवन उनका सर्वांग हैं। अनन्त ब्रह्माण्ड के अनन्त जीवों के आधारभूत होने के कारण उनका (श्री विष्णु का) नाम है - "अनन्त देव" एवं "अनन्त शीर्ष पुरुष"। यह अनन्त सत्ता पुराण में "सहस्त्रशीर्ष-धारी नारायण" के नाम से विख्यात है। इस गुण की शक्ति अर्थात् अधिष्ठात्री देवी "लक्ष्मी" हैं।

लक्ष्मीजी की कृपा

ईश्वर और लक्ष्मीजी की कृपा में बड़ा अन्तर है। ईश्वर स्वतन्त्र हैं। जीवों को उनके कर्म के अनुसार दण्ड देने वाले भी हैं। इसलिये कृपा हमेशा उनके काबू में नहीं रह सकती। किन्तु लक्ष्मीजी केवल दयामूर्ति हैं। दण्डनीय बुद्धि उनमें स्वप्न में भी नहीं आती। माँ लक्ष्मी दया का महान् अवतार मानी जाती हैं, क्योंकि लक्ष्मी अपनी कृपा संसार के प्रत्येक प्रकार के व्यक्ति पर करती हैं। माँ लक्ष्मी भगवान् को समझा बुझाकर "मेरे भक्त अपराधी नहीं हैं" कहती हुई संसार के समस्त मनुष्यों पर कृपा करती हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

समृद्धि और धन प्राप्ति का रहस्य

लक्ष्मीजी का एक नाम कमला है। कमल उनका प्रिय आसन है। कमल की नाल पृथ्वी की तरफ संकेत करके बताती है कि जगत् की सारी सम्पदा धरती के गर्भ में ही छिपी है। कृषि, खनिज, तेल-कूप, विविध रत्न आदि सब धरती देती है।

समृद्धि उसे मिलती है, धन उसे उपलब्ध होता है, जो लगन से उद्योग करके धरती से उसकी अपरिमित सम्पदा प्राप्त करने की निरन्तर चेष्टा करता है।

लक्ष्मीजी की अभय मुद्रा का आशय यह है कि समृद्ध व्यक्तियों को अपने व्यवसाय और समृद्धि की वृद्धि के लिए उन सब लोगों को जिनका पालन-पोषण उनके धन से होता है, इस प्रकार से सुरक्षा, सहायता, सुविधा, सेवा और सौहार्द्र प्रदान करके कष्टों, अभावों, चिन्ताओं और सन्देहों से मुक्त करना आवश्यकता होता है। ऐसा करने से असंतोष, अशांति, विरोध और बाधाओं का सामना उन्हें नहीं करना पड़ता।

महालक्ष्मी के जिस स्वरूप व महिमा की कल्पना की गई है, उसमें उनका हाथ धन अर्पित करता हुआ हमें दिखाई देता है। लक्ष्मी का मुक्त हस्त से धन अर्पित करना इस बात का संकेत है कि समृद्धि की वृद्धि चाहने वाले व्यक्ति को सत्कार्यों के लिए खुले हाथों धन देने की परमार्थी प्रवृत्ति भी अपनानी चाहिए। दान से सदा लक्ष्मी संतुष्ट और प्रसन्न होती हैं, पुण्य और सम्मान में वृद्धि होती है और धन का उपार्जन सार्थक होता है।

लक्ष्मीजी के हाथ में कमल शोभित है और उनका आसन भी कमल है। कमल जल में उत्पन्न होता है, पर वह हमेशा जल के ऊपर उठा रहता है, जल के स्पर्श से दूर रहता है। यह इस बात का संकेत करता है कि मनुष्य के पास चाहे जितना भी धन हो जाय, उसे उसमें लिप्त नहीं होना चाहिये। यदि वह लिप्त होता है, तो उसमें भोग-विलास की लालसा प्रबल होती है, समृद्धि का ह्रास होने लगता है। उसे तो कमल की भाँति निर्लिप्त रहना चाहिये।

लक्ष्मीजी के भक्तगण जब चित्रों में भगवान् विष्णु के पाँव दबाती हुई लक्ष्मी को देखते हैं तो वे महादेवी लक्ष्मी की असीम पति भक्ति और अथक पतिसेवा का ध्यान करके भाव-विभोर हो उठते हैं। मगर इसमें एक गूढ़ संकेत भी छुपा हुआ है। संकेत यह है कि लक्ष्मी की कृपा प्राप्त करने के लिए श्री नारायण के चरणों का आश्रय लेना अनिवार्य है, क्योंकि लक्ष्मी वहीं निवास करती हैं। जो लोग श्री नारायण से विमुख होकर लक्ष्मी को अपने घर में बसाने की इच्छा रखते हैं, वे लक्ष्मी के कृपा पात्र नहीं हो सकते। लक्ष्मी का अकेले आना शुभ नहीं है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

लक्ष्मीजी का वाहन "उल्लू" भी किसी अमंगल की चेतावनी का चिह्न है। पक्षियों में उल्लू अत्यंत मनहूस और अशुभ सूचक पक्षी माना जाता है। समृद्धि चाहने वाले जब श्री नारायण को भूलकर केवल लक्ष्मीजी की उपासना करते हैं, तो लक्ष्मीजी उनके पास उल्लू पर सवार होकर अकेली ही आती हैं और अपने साथ नाना प्रकार की बुरी प्रवृत्तियों, बुरे व्यसन और कुविचार लाती हैं। इसके विपरीत जब उनका आह्वान भगवान् विष्णु के साथ किया जाता है, तो वे अपने पति के साथ वाहन गरुड़ पर बैठकर आती हैं। गरुड़ मंगलकारी, सौभाग्यदायक और सभी शुभ लक्षणों से युक्त है।

इसलिए प्रत्येक सनातनी हिन्दू परिवार को सुख, शांति, समृद्धि तथा धन की स्थाई बढ़ौत्री के लिए श्री लक्ष्मी-नारायण की साथ-साथ पूजा करनी चाहिये। यह मेरा तथा कई भक्तों का अनुभूत प्रयोग है।

यहाँ मुझे एक कथा याद आ रही है– एक बार श्री विष्णु एवं लक्ष्मीजी के मध्य बहस छिड़ गई। बहस का विषय था कि 'हममें से कौन बड़ा है?' विष्णु भगवान् का कहना था कि मैं बड़ा, लक्ष्मीजी का कहना था कि मैं बड़ी। अब इस बात का निर्णय कैसे हो, फैसले के लिए न्यायाधीश चाहिए। दोनों न्यायाधीश की खोज में धरती पर चले आए। चलते-चलते देखते हैं कि सामने से कुछ लोग अर्थी लिए धीरे-धीरे चले आ रहे हैं। विष्णुजी ने उस मुर्दे को ही पंच बनाने का निर्णय कर लिया। मुर्दा और पंच? लक्ष्मीजी सुनकर चकित रह गईं। विष्णुजी ने समझाया तो लक्ष्मीजी मुर्दे को न्यायाधीश बनाने के लिए तैयार हो गईं।

वे लोग अर्थी को लेकर उनके पास से गुजर रहे थे कि विष्णुजी ने लक्ष्मीजी से अपना चमत्कार दिखाने के लिए कहा। लक्ष्मीजी उस मुर्दे को ले जा रहे आदमियों के चारों ओर स्वर्ण मुद्रा के रूप में बरसने लगीं। लक्ष्मीजी को देखकर लोगों ने मुर्दे को वहीं पटका और लगे स्वर्ण मुद्रा बटोरने। लक्ष्मीजी अपनी इस चमत्कारी स्वाभाविक जीत के लिए बड़े गर्व के साथ विष्णुजी की तरफ देखने लगीं। उधर विष्णुजी भी अपनी चिर-परिचित मोहक मुस्कान के साथ मौन खड़े रहे। लक्ष्मीजी बोलीं– प्रभु। देख लिया, अब तो पता चल गया कि कौन बड़ा है? हाँ मैंने तो देख लिया, तुम भी तो देख लो। क्या? लक्ष्मीजी ने आश्चर्य से पूछा। यही कि कौन बड़ा है? लक्ष्मीजी ने फिर पूछा– कौन बड़ा है? विष्णुजी बोले कि "तुम्हें तो उन्हीं लोगों ने उठाया, जिनमें मैं पहले से विराजित था, मगर जिसमें मैं नहीं था, यदि उसने उठाया होता तो मानता कि तुम बड़ी हो। विष्णुजी का अभिप्राय समझकर लक्ष्मीजी नत-मस्तक हो गईं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्री लक्ष्मीजी एवं श्री गणेश

भगवान् गणेश पंचदेवों में अग्रगण्य हैं। सभी आध्यात्मिक अनुष्ठानों में सर्वप्रथम उन्हीं का स्मरण और पूजन किए जाने की शास्त्रीय विधि है, जिसका पालन व्यापक रूप से प्रत्येक सनातनी के घर में भी किया जाता है। गणेशजी का वैदिक नाम "गणपति" है। जिसका उल्लेख ऋग्वेद (२, २३, १) में मिलता है।

गणेशजी देव मण्डल के गणपति के रूप में प्रतिष्ठित हैं। वैदिक शिव अर्थात् रुद्र के गणों के वे अधीश्वर हैं। पुराणों में रुद्र के मरुत् आदि असंख्य गणों का उल्लेख है, जिनके नायक या स्वामी होने से गणेशजी को "विनायक" या गणपति कहते हैं। इस प्रकार सृष्टि के आदि-काल से ही गणेश का सम्बन्ध आर्य-गणों, रुद्र-गणों एवं शिव परिवार से रहा है। रुद्र से गणेश को विघ्न-कारी जैसी भयंकर गुण और शिव से सिद्धिकारी, मंगलदायक गुण मिले हैं, जिससे वे "निग्रह" व "अनुग्रह" दोनों शक्तियों से सम्पन्न हैं।

गणेश या गणपति के आविर्भाव के सम्बन्ध में अनेक कथायें हैं। मुख्य रूप से उन्हें शिव-पार्वती का पुत्र माना गया है। मूलतः वे "शक्ति-पुत्र" के रूप में ही प्रतिष्ठित हैं और "आत्मा वै पुत्र जायते" इस सिद्धान्त के अनुसार गणेशजी साक्षात् शक्ति स्वरूप ही हैं।

मंगलमूर्ति भगवान् श्री गणेश वेदविहित समस्त धर्मों में प्रथम पूज्य नित्य देवता हैं। मंगलमूर्ति श्री गणेश के नाम, स्मरण, ध्यान, आराधना, मंत्र, प्रार्थना से मेधाशक्ति का परिष्कार होता है, समस्त कामनाओं (किसी भी इष्टदेवता की साधना करने से) की पूर्ति होती है और समस्त विघ्नों एवं बाधाओं का विनाश होता है और मनोरथ की प्राप्ति होती है।

अतः श्री गणेश की पूजा प्रथम देवता के रूप में समस्त आध्यात्मिक कर्मों में अनिवार्य रूप से की जाने का विधान है। श्री गणेश विद्या, बुद्धि और समस्त सिद्धियों के दाता कहे जाते हैं। भगवान् शिवजी ने श्री गणेश जी को वरदान (लिङ्ग पुराण) दिया था कि 'जो तुम्हारी सर्वप्रथम पूजा करे बिना कल्याणकारी कर्मों का अनुष्ठान, पूजा, साधना करेगा, उसका मंगल भी अमंगल में परिणित हो जायेगा। तीनों लोकों में जो चन्दन, पुष्प, धूप, दीप आदि के द्वारा तुम्हारी पूजा किये बिना ही कुछ पाने की चेष्टा करेंगे, वे देवता हों अथवा और कोई उन्हें कुछ भी प्राप्त नहीं होगा। जो देवता या मनुष्य श्री गणेश की पूजा करेंगे वे निश्चय ही इन्द्रादि देवताओं द्वारा भी पूजित होंगे। जो लोग फल की कामना से ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र अथवा अन्य

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

देवताओं की पूजा करेंगे किन्तु तुम्हारी पूजा नहीं करेंगे, उन्हें तुम विघ्नों द्वारा बाधा पहुँचाओगे।'

श्री गणेश विघ्नहर्ता एवं शक्ति पुत्र होने से प्रत्येक सनातनी प्रतिदिन गणेशजी की महालक्ष्मीजी के साथ पूजा कर उन्हें पति से विमुख तो नहीं कर रहा है? मेरे मत में श्री गणेशजी को हम श्री लक्ष्मीजी के साथ पूजकर उन्हें श्री विष्णुजी से अस्थाई रूप से अलग कर रहे हैं। क्योंकि लक्ष्मीजी तो भगवान् विष्णु के हृदय में निवास करती हैं। इस मुख्य कारण से लक्ष्मीजी अस्थिर रूप से प्रसन्न तो हो जाती हैं, किन्तु स्थिर रूप से प्रसन्न नहीं होती हैं। श्री लक्ष्मीजी का अस्थिरता (चंचला) का यह मुख्य आधार है। इस आधार के कारण श्री लक्ष्मीजी को उनके पति श्री विष्णुजी के साथ ही पूजना श्रेयस्कर है। बिड़ला परिवार श्री लक्ष्मी-विष्णु (श्री लक्ष्मी-नारायण) के मंदिर का निर्माण कर और दोनों को साथ पूजकर अपनी चौथी पीढ़ी में धन की बराबर बढ़ौत्री कर रहा है। ऐसी मान्यता है कि तीन पीढ़ियों के बाद धन का क्षय होने लगता है। लक्ष्मीजी को जब हम उनके पति विष्णु के साथ पूजेंगे तो वे "चंचला" न होकर "स्थिर" रहेंगी।

श्री लक्ष्मी और श्री विष्णु की एकरूपता

लक्ष्मी और विष्णु भगवान् एक ही हैं। विष्णु से लक्ष्मी भिन्न नहीं हैं। विष्णु सर्व-व्यापक हैं और उनकी शक्ति जगत्माता लक्ष्मी भी सर्व–व्यापिका हैं।

भगवान् का कभी साथ न छोड़ने वाली जगज्जननी लक्ष्मीजी नित्य हैं और श्री विष्णु भगवान् सर्वव्यापक हैं।

विष्णु अर्थ हैं, तो लक्ष्मीजी वाणी हैं। हरि न्याय, तो लक्ष्मीजी नीति। भगवान् विष्णु बोध हैं, तो ये बुद्धि। वे धर्म हैं, तो ये सत्क्रिया। भगवान् जगत् के सृष्टा हैं, तो लक्ष्मीजी सृष्टि। श्री हरि भूधर हैं, तो लक्ष्मीजी भूमि। भगवान् सन्तोष हैं, तो लक्ष्मीजी नित्य तुष्टि। भगवान् काम हैं, तो लक्ष्मीजी इच्छा। भगवान् यज्ञ हैं, तो लक्ष्मीजी दक्षिणा।

मधुसूदन (विष्णु) यजमान-गृह हैं, तो लक्ष्मीजी पत्नीशाला। श्री हरिरूप (यज्ञ-स्तम्भ) हैं, तो लक्ष्मीजी चिति (इष्ट का चयन)। भगवान् कुशा हैं, तो लक्ष्मीजी समिधा। भगवान् साम-स्वरूप हैं, तो कमला देवी उद्गीति। जगत्पति भगवान् वासुदेव अग्नि हैं, तो लक्ष्मीजी स्वाहा।

भगवान् विष्णु शंकर हैं, तो श्री लक्ष्मीजी गौरी। श्री केशव सूर्य हैं, तो कमलवासिनी श्री लक्ष्मीजी प्रभा। श्री विष्णु पितृ-गण हैं, तो श्री कमला

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नित्य-पुष्टि-दायिनी स्वधा। विष्णु अति विस्तीर्ण सर्वात्मक आकाश हैं, तो लक्ष्मीजी स्वर्ग लोक। भगवान् श्रीधर चन्द्रमा हैं, तो लक्ष्मीजी अक्षय कान्ति। श्री हरि सर्वगामी वायु हैं, तो लक्ष्मीजी जगच्चेष्टा (जगत की गति) और धृति (आधार)।

श्री गोविन्द समुद्र हैं, तो लक्ष्मीजी तट-भूमि। भगवान् मधुसूदन देवराज इन्द्र हैं, तो लक्ष्मी इन्द्राणी। चक्रपाणि भगवान् साक्षात् यम हैं, तो श्री कमला यम पत्नी-धूमोर्णा। देवाधिदेव श्री विष्णु स्वयं कुबेर हैं, तो लक्ष्मीजी साक्षात् ऋद्धि। केशव स्वयं वरुण हैं, तो महाभागा लक्ष्मीजी गौरी। श्री हरि-देव सेनापति स्वामी कार्तिकेय हैं, तो लक्ष्मीजी देव-सेना।

भगवान् गदाधर (शक्ति) के आधार हैं, तो लक्ष्मीजी शक्ति। भगवान् निमेष हैं, तो लक्ष्मीजी काष्ठा। भगवान् मुहूर्त हैं, तो लक्ष्मीजी कला। श्री हरि दीपक हैं, तो लक्ष्मीजी ज्योति। श्री विष्णु वृक्ष हैं, तो लक्ष्मीजी लता। श्री विष्णु दिन हैं, तो लक्ष्मीजी रात्रि। भगवान् नद हैं, तो लक्ष्मीजी नदी। वरदायक श्री हरि वर हैं, तो पद्म-निवासिनी श्री लक्ष्मीजी वधू। कमल-नयन भगवान् ध्वजा हैं, तो कमलालया लक्ष्मीजी पताका। जगदीश्वर परमात्मा नारायण लोभ हैं, तो लक्ष्मीजी तृष्णा। रति और राग भी साक्षात् श्री लक्ष्मी और गोविन्द रूप ही हैं।

संक्षेप में यह कहना चाहिए कि देव, तिर्यक और मनुष्य आदि में पुरुष-वाची तत्व श्री हरि हैं और स्त्री-वाची तत्व श्री लक्ष्मीजी। इनके परे और कोई नहीं है।

भगवान् विष्णु - स्वरूप एवं ध्यान

ऋग्वेद के "विष्णु सूक्त" में भगवान् विष्णु की महिमा का उल्लेख किया गया है।

भगवान् विष्णु दया-भाव से अपने चरण उठाते हैं। वे संसार को दुःखों से छुड़ाते हैं और पृथ्वी को आसुरी भावों से दूर रखते हैं। वे विश्व के रक्षक एवं संरक्षक हैं। भगवान् विष्णु के दस अवतार प्रसिद्ध हैं—

१. मत्स्य
२. कूर्म (कच्छप)
३. वराह
४. नृसिंह
५. वामन
६. परशुराम
७. राम
८. कृष्ण
९. बुद्ध और
१०. कल्कि

मत्स्य, कूर्म (कच्छप), वराह और नृसिंह - ये चार अवतार भगवान् विष्णु के प्रारम्भिक रूप के प्रतीक हैं। पाँचवें अवतार "वामन" के रूप में भगवान् विष्णु ने

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सारे विश्व को तीन पगों में नाप लिया था, जिसका वर्णन ऋग्वेद में मिलता है। भगवान् विष्णु के महान् कार्यों का परिचय इन अवतारों से मिलता है। अन्य अवतारों - जमदग्नि-पुत्र परशुराम, दशरथ-नन्दन-रामचन्द्र, वसुदेव पुत्र श्री कृष्ण और बुद्ध के द्वारा वैष्णव परम्परा का युग-युग में प्रतिपादन हुआ है। दसवाँ कल्कि अवतार भविष्य में होने वाला है।

पुराणों में २४ अवतारों का भी उल्लेख है, जिससे उक्त दस अवतारों के अतिरिक्त १४ अन्य अवतार ज्ञात होते हैं - ११. नारायण (विराट पुरुष), १२. ब्रह्मा १३. सनक-सनन्दन-सनत्कुमार सनातन १४. नर नारायण १५. कपिल १६. दत्तात्रेय १७. सुयश १८. हयग्रीव १९. ऋषभ २०. पृथु २१. हंस २२. धन्वन्तरि २३. मोहिनी २४. वेदव्यास एवं बलराम।

महाभारत के अनुसार भगवान् विष्णु सर्वत्र व्याप्त हैं। वे सृष्टि के स्वामी हैं और आसुरी शक्तियों का संहार करते हैं। उनका एक नाम "हरि" है, जिसका अर्थ पापों को दूर करने वाला अथवा अज्ञान और उसके दुष्परिणामों को दूर करने वाला है। दूसरा नाम "शेषशायी" या "अनन्त-शायी" है। जब भगवान् विष्णु शयन करते हैं तो सारा विश्व अव्यक्त अवस्था में पहुँच जाता है। व्यक्त सृष्टि के प्रतीक "शेष-शायी-विष्णु" का प्रसिद्ध नाम "नारायण" है, जिसका अर्थ है "नार" (जल) में आवास करने वाले अथवा जिनमें समस्त नरों का अयन (आवास) है, वे नारायण कहलाते हैं।

विष्णुजी के दस स्वरूप प्रसिद्ध हैं - १. केशव लम्बे केशवाले २. नारायण - शेषशायी ३. माधव - माया-पति ४. गोविन्द - पृथ्वी के रक्षक ५. विष्णु - सर्वव्यापक ६. जनार्दन - भक्तों के रक्षक ७. उपेन्द्र - इन्द्र के भाई ८ हरि - दुःख, दारिद्रय पाप आदि के हरण करने वाले। ९. वासुदेव - अन्तर्यामी १०. कृष्ण - आकृष्ट करनें वाले। इनके अतिरिक्त राम - रमणकर्ता और परशुराम भी लोक प्रसिद्ध हैं।

सर्वव्यापक परमात्मा भगवान् श्री विष्णु व्यापक होने पर भी एक वेश में अवतरित होते हैं। उनके अनन्त रूप तथा अनन्त अर्चा-विग्रह हैं। वे अपने भक्त एवं साधक की भावना के अनुसार वैसे ही रूप धारण कर उसे दर्शन देते हैं। सभी विग्रहों में उन परमात्मा प्रभु के दर्शन होते हैं।

भगवान विष्णु चतुर्भुज हैं। वे सूर्य के समान तेजस्वी एवं देवताओं के स्वामी हैं। भगवान विष्णु को चारों हाथों में चार वस्तुएँ (शंङ्ख, चक्र, गदा एवं पद्म) धारणकर भक्तों को चार पदार्थ (धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष) देने पड़े। भगवान श्री विष्णु के ऊपरी दाहिने हाथ में चक्र है, जिससे वे आर्त भक्तों की रक्षा करते हैं और नीचे दाहिने हाथ में गदा है, जिससे जिज्ञासु भक्तों को अपने स्वरूप का ज्ञान प्रदान करते हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भगवान के ऊपर बायें हाथ में शंङ्ख है, जिससे वे ज्ञानी भक्तों को मोक्ष गति देते हैं एवं नीचे बायें हाथ में पद्म अर्शात कमल का फूल है, जिससे अर्थार्थी भक्तों को धन पदार्थ इत्यादि प्रदान करते हैं। वस्तुतः भगवान विष्णु को भक्तों की प्रसन्नता के लिए चतुर्भुज रूप होना पड़ा।

भगवान् विष्णु की ग्रीवा शङ्ख के समान है, मुख गोल है तथा नेत्र बड़े ही मनोहर हैं, दांत रत्नों के समान चमकीले हैं। बाल घुंघराले हैं, होंठ विम्बाफल के समान लाल हैं, मस्तक पर मनोरम किरीट है। कौस्तुभमणि से उनकी कान्ति विशेष रूप से बढ़ गयी है, सूर्य के समान तेजोमय कुण्डल हैं, पुण्यमय श्रीवत्स चिह्न देदीप्यमान है। उनके श्याम विग्रह (शरीर) पर बाजूबन्द, कंगन और मोतियों के हार नक्षत्रों के समान प्रभासित हैं। स्वर्णिम पीताम्बर से उनकी सुषमा द्विगुणित हो गयी है। पीत वर्ण त्याग का प्रतीक है। रत्न जड़ित मुदरियों से शोभित अँगुलियों से भगवान् विष्णु का सौन्दर्य निखर उठता है।

भगवान् की चार भुजायें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष रूपी चार केयूरों से विभूषित हैं। वेद को ही उनका 'पीताम्बर' कहा जाता है। श्री विष्णुजी के नवनील नीरद कान्तिमय शरीर पर पीताम्बर बड़ा ही मनोरम दिखता है।

भगवान् विष्णु के हाथ में शोभित पद्म सम्पूर्ण संसार का प्रतीक है।

समस्त ऐश्वर्य, धर्म, यश, लक्ष्मी, ज्ञान और वैराग्य इन छः पदार्थों का नाम. ही "लीलाकमल" है जिसे भगवान् अपने हाथ में धारण करते हैं।

क्षर-सम्पूर्ण विनाशी शरीर और उत्तम जीव - ये दोनों भगवान् विष्णु के कानों में झलमलाते कुण्डल हैं। भगवान् विष्णु सब लोकों को अभय करने वाले ब्रह्म लोक को मुकुट के रूप में धारण करते हैं। भगवान् का कूटस्थ सत्स्वरूप ही किरीट कहा जाता है। भगवान् विष्णु सत्व रज आदि गुणों वाली माया को वनमाला के रूप में अपने कण्ठ में धारण करते हैं।

श्री विष्णु की वैजयन्तीमाला मुक्ता, माणिक्य, मरकत, इन्द्रनील और हीरक पंचमणिमयी है। यह पंचतन्त्र मात्राओं और पंचभूतों के रूप में शोभित है।

भगवान् श्री विष्णु के आयुध अनन्त और असंख्य हैं। शंख, चक्र, गदा, धनुष, बाण, परसु, पाश, खड्ग आदि भगवान् के प्रमुख आयुध हैं।

भगवान् का शंख पाञ्चजन्य हृषिकेशो कहा जाता है। पांचजन्य शंख जल तत्व रूप है। शंख सद् विचारों के प्रसार का प्रतिनिधित्व करता है।

भगवान् आयुध के रूप में सुदर्शन चक्र धारण करते हैं। चक्र संकल्प रूप है। संकल्प को दृढ़ रखना चाहिये। चक्र की क्रिया शक्ति का प्रतीक है। निरन्तर परिश्रम करते रहने की प्रेरणा देता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पवित्र, निर्मल और सात्विक बुद्धि आदि विद्या के रूप में गदा विष्णु के हाथ में है। इसी शक्ति से वह मन की लगाम को अपने हाथों में रखते हैं। कमल की शिक्षा है कि संसार के समस्त कार्य करते हुए उनसे अलिप्त रहो।

विष्णु शेष शैय्या पर विराजमान हैं। सर्व संहारक शक्ति तामसिकता, क्रोध और शत्रुता का प्रतीक है। वह हजार फन वाले शेष पर शांतिपूर्वक शयन करते हैं। साधक हजारों सांसारिक कठिनाइयों व बाधाओं के आने पर भी अपनी बुद्धि को स्थिर रखता है और मन को असन्तुलित नहीं होने देता । परिवार और समाज में सहिष्णुता एक आवश्यक गुण है, यही गुण धीर और गम्भीर होने का परिचय देता है, यही महानता की कसौटी है, प्रगतिशील व्यक्ति का चिन्ह है। ऐसा व्यक्ति ही सबको अपना साथी और मित्र बना सकता है। सहिष्णुता मानसिक शक्ति के विकास की द्योतक है। यही धारणा है कि श्री विष्णु ने सर्व जाति से सम्बन्ध बना रखा है।

देश के विभिन्न भागों में भगवान् विष्णु की अर्चना-पूजा विभिन्न नामों एवं अनेक रूपों में होती आयी है। जैसे - कहीं चतुर्भुज श्री विष्णु रूप में, कहीं लक्ष्मी-नारायण के रूप में, सत्यनारायण के रूप में, वेंकटेश रूप में, बालाजी रूप में, त्रिविक्रम रूप में, लक्ष्मी-नृसिंह रूप में, शालग्राम आदि-आदि रूप में।

भगवान् विष्णु के चार आयुध - १. शंख, २. चक्र ३. गदा और ४. पद्म और पीताम्बर प्रसिद्ध हैं। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चतुर्विध पुरुषार्थ प्रदान करने के लिये इन्हें वे अपने चारों हाथों में धारण किए हुए हैं। जो शंख, गदा, चक्र, पद्मधारी तथा किरीट और कुण्डलों से विभूषित पीताम्बर से सुशोभित सुन्दर कमलों के समान नेत्रों वाले वनमाला तथा कौस्तुभमणि को धारण करने वाले, श्री लक्ष्मी एवं भू-देवियों के साथ नित्य रहने वाले शेषशायी नारायण का ध्यान करता है वह सब बंधनों से मुक्त हो जाता है।

भगवान् विष्णु के वाहन के रूप में "गरुड़" प्रसिद्ध है, जो वैदिक मंत्रों की शक्ति, गति और ज्योति के प्रतीक हैं। श्रीमद्भागवत में उल्लेख है कि वृहत् और रथन्तर नामक सामदेव के दो विभाग ही गरुड़जी के पंख है और उड़ते समय इन पंखों से सामगान की ध्वनि निकलती है। तीन वेदों का नाम ही गरुड़जी है। वेद परमात्मा का वहन करते हैं, इसलिए उन्हें "वाहन" कहा जाता है। वे गरुड़जी के पर्याय स्वीकार किये गये हैं।

महाभारत के आदिपर्व के अनेक अध्यायों में गरुड़जी का विस्तृत आख्यान प्राप्त होता है। एक बार अमृत लेकर गरुड़जी आकाश में उड़ते जा रहे थे कि भगवान् विष्णु का उन्हें साक्षात्कार हो गया। भगवान् ने उनको वर देने की इच्छा प्रकट की।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गरुड़जी ने माँगा कि "मैं आपकी ध्वजा में स्थित रहूँ तथा अमृत पिये बिना ही अजर-अमर हो जाऊं। भगवान् विष्णु से ऐसा वर माँग कर गरुड़जी ने कहा कि मैं आपको भी वर देना चाहता हूँ। इस पर भगवान् ने उनसे अपना वाहन होने का वर माँगा। गरुड़जी भगवान् के वाहन हो गये। भगवान् ने गरुड़ को अपना ध्वज बना लिया. उनको ध्वज पर स्थान दिया और कहा इस प्रकार तुम मेरे ऊपर रहोगे।"

"महोपनिषद" के अनुसार "नारायण" अर्थात् भगवान् विष्णु ही अनन्त ब्रह्म हैं।

भगवती महालक्ष्मी

भगवती महालक्ष्मी मूलतः भगवान् विष्णु की अभिन्न शक्ति हैं और सूर्य एवं उनकी प्रभा तथा अग्नि की दाहिका शक्ति एवं चंद्रमा की चंद्रिका समान वे उनकी नित्य सहचरी हैं। पुराणों के अनुसार वे पद्मवनवासिनी, सागरतनया और भृगु की पत्नी ख्याति की पुत्री होने से भार्गवी नाम से विख्यात हैं। इन्हें पद्मा, पद्मालया, श्री कमला, हरिप्रिया, इन्दिरा, लोक माता रमा, समुद्रतनया, जलधिजा इत्यादि नामों से भी अभिहित किया गया है। इनके कई शतनाम तथा सहस्त्र नाम स्त्रोत उपलब्ध होते हैं। ये वैष्णवी शक्ति हैं। भगवान् विष्णु जब-जब अवतीर्ण होते हैं, तब-तब वे लक्ष्मी, सीता, राधा, रुक्मणी आदि रूपों में उनके साथ अवतरित होती हैं।

इनकी गणना तांत्रिक ग्रंथों में दस महाविद्याओं के अंतर्गत कमलात्मिका नाम से हुई है। पुराणों के अनुसार राज्यलक्ष्मी महर्षि दुर्वासा के शाप से समुद्र में प्रविष्ट हो गयी फिर देवताओं की प्रार्थना से प्रकट हुईं, तब उनका सभी देवता, ऋषि-मुनियों ने अभिषेक किया और उनके अवलोकन-मात्र से सम्पूर्ण विश्व समृद्धिवान् तथा सुख शांति से सम्पन्न हो गया। इससे प्रभावित होकर इन्द्र ने उनकी दिव्य स्तुति की।

विश्व के प्राचीनतम ग्रन्थ ऋग्वेद के पंचम आत्रेय मण्डल का खिल-सूक्त (श्री सूक्त) देवी लक्ष्मी से ही सम्बद्ध है। पुराणों तथा रामायण, महाभारत आदि ग्रन्थों के अनुसार इनके "विष्णु पत्नी" रूप की सर्वमान्यता है। ये सुवर्णवर्णा चतुर्भुजा अनिन्द्य सौन्दर्य से सम्पन्न हैं। सर्वाभरण भूषित कमल के आसन पर स्थित हो अपने कृपाकटाक्ष से भक्तों की समस्त कामनाओं की पूर्ति करती हैं। श्री सम्प्रदाय की आद्य-प्रवर्तिका के रूप में इनका उल्लेख मिलता है। पुराणों में इनकी उत्पत्ति के सम्बन्ध में कई कथाएं प्राप्त होती हैं। ब्रह्मवैवर्तपुराण के अनुसार सृष्टि के पहले रासमण्डल में स्थित परमात्मा श्री कृष्ण मन से एक गौरवर्णा देवी प्रकट हुईं, जो रत्नमय अलंकारों से अलंकृत थीं। उनके श्री अंगों पर पीताम्बर सुशोभित हो रहा था और मुख पर मन्द

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हास्य की छटा थी। वे नवयौवना देवी सम्पूर्ण ऐश्वर्यों की अधिष्ठात्री तथा फल रूप से सम्पूर्ण सम्पत्तियां प्रदान करने वाली थीं। वे ही स्वर्गलोक में स्वर्ग-लक्ष्मी तथा राजाओं के यहाँ राजलक्ष्मी कहलाती हैं।

इसी पुराण में समुद्रमन्थनोपरान्त सिन्धु-सुता रूप में भगवती लक्ष्मी में प्राकट्य और विष्णु-वरण की बात आती है। समग्रतः लक्ष्मीजी की उत्पत्ति के विषय में यही कथा प्रायः सर्वानुमोदित है।

देवताओं ने अमृत प्राप्ति के लिए समुद्र मंथन करने का विचार किया। समुद्र मंथन के लिए वे अकेले की सक्षम नहीं थे, अतः उन्होंने दैत्यों को भी इस कार्य को करने के लिए अपने साथ ले लिया। फलतः देवता और दैत्य दोनों ने मिलकर समुद्र का मंथन किया।

समुद्र को मथने के लिए मंदराचल पर्वत को मथनी तथा वासुकि नाग को रज्जु बनाया गया। सर्प के फण की ओर दैत्य रहे और पूँछ वाले भाग की ओर देवता।

जब मंदराचल पर्वत समुद्र में नीचे की ओर धसकने लगा, उस समय भगवान् विष्णु ने कच्छप अवतार लेकर इस पर्वत को अपनी पीठ पर रख लिया। फलस्वरूप वह अपने स्थान पर स्थिर रहा, पर्वत का नीचे की ओर धंसना रुक गया।

दीर्घ काल तक समुद्र का मंथन करते रहने के बाद उसमें से सर्वप्रथम हलाहल नामक विष प्रकट हुआ। उस विष की तीव्र ज्वाला से जब तीनों लोक हाहाकार करने लगे, उस समय शिवजी ने उस तीव्र विष को अपने कंठ में धारण कर लिया, जिसके फलस्वरूप उनका कंठ नीला पड़ गया और वे नीलकंठ कहलाने लगे।

विभिन्न रत्नों को देवता तथा दैत्यों ने परस्पर बाँट लिया था। लक्ष्मीजी को श्री विष्णु ने अपनी अर्द्धांगिनी के रूप में स्वीकार किया। तभी से लक्ष्मी विष्णु-प्रिया अथवा विष्णु पत्नी कही जाती हैं। समुद्र से उत्पन्न होने के कारण उनके नाम सिन्धुकन्या, सागरात्मजा आदि भी हैं।

लक्ष्मीजी परब्रह्म परमेश्वर की आद्य शक्ति हैं। इस आद्य-शक्ति ने ही समुद्र के गर्भ से लक्ष्मी रूप में अवतरित होकर श्री विष्णु के वामांग में स्थान लिया। महालक्ष्मी निरन्तर अपने पति भगवान् श्री विष्णु की सेवा में रहती हैं। विष्णु-पत्नी होने के कारण जहाँ भगवान् श्री विष्णु की आराधना के साथ ही श्री लक्ष्मी की भी नियमित आराधना होती है, वहाँ ये स्थिर रूप से निवास करती हैं। अन्य देवियों की भाँति लक्ष्मीजी के भी कई ध्यान, स्त्रोत, कवच, पटल आदि प्राप्त होते हैं। भगवान् विष्णु के दिव्य शरीर में उनका वक्षः स्थल ही विशेष रूप से भगवती कमला का

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

निवास स्थान निरूपित किया गया है। भगवान् विष्णु एवं लक्ष्मी का परस्पर अभेद-सम्बन्ध है। जगत् पिता भगवान् विष्णु जैसे सर्वव्यापक हैं, उसी प्रकार उनकी दिव्य-शक्ति महालक्ष्मी भी सर्वव्यापिका हैं। सोने के समान उनकी कीर्ति है। लक्ष्मीजी की चार भुजाएँ हैं, जिनमें वे बिरोजा फल, गदा, ढाल और दान पात्र धारण किए हुए हैं। मस्तक पर नाग, लिंग धारण किए हुए हैं। बिरोजा फल धर्म का, गदा शक्ति का प्रतीक है। लिंग से पुरुष का ज्ञान होता है।

दीपावली पर लक्ष्मी पूजन क्यों होता है?

दीपावली की रात्रि को कालरात्रि माना गया है। पौराणिक संदर्भ में कालरात्रि को अत्यंत अशुभ माना गया है। अत्यंत अशुभ रात्रि में अत्यंत शुभ लक्ष्मी-पूजन क्यों होता है? इस शंका का समाधान तंत्र-मंत्र-यंत्र साहित्य विज्ञान करता है।

शक्ति संगम तंत्र के काली खण्ड में अनेक विशिष्ट रात्रियों का विवरण दिया गया है। इनमें दीपावली की रात्रि को काल रात्रि कहा गया है।

श्रीविद्यार्णव तंत्र में कालरात्रि को एक शक्ति माना गया है। इसी ग्रंथ में कालरात्रि मातृकाओं का भी उल्लेख है। कालरात्रि शक्ति को श्री विद्या का अंग कहा गया है। श्री विद्या की उपासना से सुख, सौभाग्य, धन-धान्य आदि की प्राप्ति होती है।

मंत्र महोदधि में दिए गए इनके ध्यान का भावार्थ है— "उदीयमान सूर्य जैसी आभावाली, बिखरे हुए बालों वाली, काले वस्त्र धारण किये हुए, चारों हाथों में क्रमशः दण्ड, लिंग, वर एवं भुवन को धारण करने वाली, तीन नेत्र वाली, विविध आभूषणों से सुशोभित, प्रसन्न वदना, देवगणों से सेवित एवं कामबाण से विकसित शरीर वाली मायारात्रि कालरात्रि का ध्यान करता हूँ।"

कालरात्रि को जहाँ शत्रु विनाशिनी माना गया है, वहाँ सुख, सौभाग्य, वैभव देने वाली भी माना गया है। मंत्र में इनको गणेश्वरि कहा गया है, जो ऋद्धि-सिद्धि की देने वाली हैं।

दीपावली की रात्रि में आधी रात के बाद डेढ़ से दो बजे तक के समय को "महानिशा" कहा गया है, जिसमें लक्ष्मीजी की साधना का विशेष महत्व है। इस समय लक्ष्मी-नारायणजी की आराधना करने से अक्षय धन-धान्य की प्राप्ति होती है। यह समय लक्ष्मी, वैभव आदि प्राप्ति की दृष्टि से अति-महत्वपूर्ण है।

कहा गया है कि "दीपावली की रात्रि को आधी रात के पश्चात् जो दो मुहूर्त का समय है, उसको "महानिशा" कहते हैं, उसमें आराधना करने से अक्षय लक्ष्मी की

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्राप्ति होती है। दीपावली के दिन सूर्य और चन्द्रमा दोनों तुला राशि में होते हैं। तुला का स्वामी शुक्र है। शुक्र धन-धान्य प्रदान करने वाला ग्रह है।"

रुद्रयामल तंत्र में कहा गया है कि "जब सूर्य और चन्द्रमा तुला राशि में होते हैं, तब लक्ष्मी-पूजन करने से धन-धान्य की प्राप्ति होती है।"

कहा जाता है कि कार्तिक कृष्णा अमावस्या को दीपावली की रात्रि में भगवती महालक्ष्मी विश्व-भ्रमण पर अपने पति भगवान् श्री विष्णु के साथ निकलती हैं तथा जिस स्थान पर अपनी उपासना आराधना होते हुए देखती हैं, वहीं अपना स्थाई निवास बना लेती हैं।

श्री लक्ष्मीनारायण यंत्र

हमारे शास्त्रकारों, ऋषि मुनियों ने मनुष्य की स्थिति और शक्ति का अनुमान पूर्व में कर लिया था। वे जानते थे कि कलियुग में मनुष्य अल्पायु, अशक्त, अल्पज्ञ होगा, किन्तु उसकी भावना और आकांक्षा अनन्त आकाश जैसी होगी। वह परमाणु युग में पहुँच कर मन की गति के समान गति वाले विमानों के युग में प्रत्येक कार्य की सिद्धि के लिए अधिक समय नहीं दे पाएगा। किन्तु सफलता के लिए उसकी छटपटाहट, विलम्ब को सहन करने में कभी तत्पर नहीं होगी। फिर दीर्घकालीन तपस्या की तो बात ही कहाँ?

सम्भवतः यही कारण है कि "यंत्र" का आविष्कार हुआ। "यंत्र" एक ऐसी वस्तु है जो साधना का भी साधन है और इच्छित फल प्राप्ति का भी।

विश्व की समस्त वस्तुओं में किसी न किसी प्रकार की एक निश्चित आकृति अवश्य है। ऐसी आकृतियों में से कतिपय आकृति का तत्ववेत्ता महर्षियों ने अपने दीर्घकालीन स्वाध्याय, मनन, निध्यासन (निद्रा का परित्याग करना), अनुभूति के आधार पर परीक्षण किया। उसके फलस्वरूप यह निर्णय लिया गया कि कौन-सी आकृति किस देव से सम्बद्ध होकर कौन-कौन सा कार्य सिद्ध करने में सहायक होती है।

सृष्टि के उपादान कारणभूत पाँच तत्व—१.आकाश, २. वायु, ३. अग्नि, ४. जल और ५. पृथ्वी का उपर्युक्त आकृतियों में समन्वय होने से इन तत्वों के गुण धर्म भी कार्य-सिद्धि में सहायक होते हैं। यह बात खोजकर इन तत्वों के मण्डलों का उसमें मिश्रण किया। मण्डलों के आकार, मूल-आकारों के साथ मिलाकर ही मौन नहीं रहे, अपितु उन आकृतियों को और भी गतिशील बनाने की दृष्टि से इनमें कहीं अंक, कहीं वर्ण, कहीं बीजाक्षर तो कहीं मन्त्राक्षर स्थापित करने के विधान प्रस्तुत किए गए।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सौ में से पचास प्रतिशत व्यक्ति ऐसे मिल जाएँगे जो किसी भी धर्म के अनुयायी होने पर भी यन्त्र शक्ति के प्रति पूर्ण श्रद्धावान होते हैं। किसी के गले में, किसी की भुजा पर, किसी की ऊँगली में तो किसी के घर में, पूजा में, दीवार पर, चित्रों में यंत्र अवश्य होंगे। धार्मिक प्रतीक के रूप में यन्त्रमय प्रतीक भी इसी प्रकार अनेक मिल जाएँगे।

भारत वर्ष में जितने भी सुप्रसिद्ध प्रतिष्ठित धार्मिक देव-प्रतिमाएँ हैं, जितने भी धार्मिक भवन मंदिर हैं, सभी के मूल में यंत्रों की स्थापना अवश्य है। तिरुपति, नाथद्वारा, जगन्नाथपुरी, अम्बाजी, महाकाल, कांची आदि में विराजमान यंत्रराजों की प्रसिद्धि तो सर्व विदित है।

यंत्र क्या है?

"यंत्र" शब्द "यम्" धातु से बना है। इसका अर्थ "जो व्यक्ति अपनी चेष्टाओं को नियमित करके आकार विशेष में अपने इष्ट की अर्चना साधना करता है, उसकी प्राण रक्षा करने वाला यंत्र है। यंत्र शक्तियों का भण्डार होता है, इससे साधक अपनी साधना के बल पर यथेष्ट ऊर्जा प्राप्त कर सकता है।

"यंत्र" को देवताओं का आवासगृह माना जाता है। यंत्र को "देव नगर" अथवा "देवताओं का आवास गृह" कहा जाता है। यह गृह एक मजबूत दुर्ग है, जिसमें अपने-अपने स्थान, दिशा, मण्डल कोण आदि के अधिपति देवता पूर्ण रूप से सादर आमंत्रित होकर पूजा प्राप्त करते हैं तथा यंत्र के प्रधान अधिष्ठाता देव की आज्ञा पाकर अपने-अपने स्थानों की सुरक्षा के लिए नियुक्त होते हैं। इस तरह पूरा देव परिवार धारक - साधक की सुरक्षा एवं कार्यसिद्धि में सदा-सदा सहायक होता है।

यंत्र की रचना बिन्दु से होती है। बिन्दु शब्द की रचना में तीन धातुओं का एकीकरण माना गया है। पहले का अर्थ 'सत्ता' दूसरे का अर्थ 'ज्ञान' तथा तीसरे का अर्थ 'लाभ'। इन तीन बिन्दु से मिलकर ही त्रिकोण बनाते हैं।

इस प्रकार यंत्र सर्वोच्च है तथा "मंत्र" और "तंत्र" इसके साधक तत्व हैं। आगमों के अनुसार तीनों मिलकर साधक की कामनाओं को पूर्ण करते हैं।

ऋषियों द्वारा विविध देवताओं के पूजा-यंत्रों के अलग-अलग स्वरूप निर्दिष्ट किए गए हैं। इसी तारतम्य में श्री महालक्ष्मी और श्री विष्णु (नारायण) के यंत्र स्वरूप को निर्दिष्ट किया गया है। इस यंत्र के जटिल स्वरूप और इसमें अन्तर्निहित विस्तृत दार्शनिक तत्वों के प्रति बड़े-बड़े भौतिक वैज्ञानिक भी चकित रह गए हैं और उन्होंने

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हमारे आगामी प्रकाशन

(१) **भाग्योदय-** कालियुग में सुखी-जीवन के लिए तन्त्र मत्र और टोटके

(२) **भाग्योदय-** अद्‌भूत चमत्कारिक साधनाएँ

(३) **भाग्योदय-** दुर्लभ स्त्रोत माला

(४) **भाग्योदय-** छिपे हुए चमत्कारिक लोग

(५) **भाग्योदय-** वाणिज्य-वास्तु

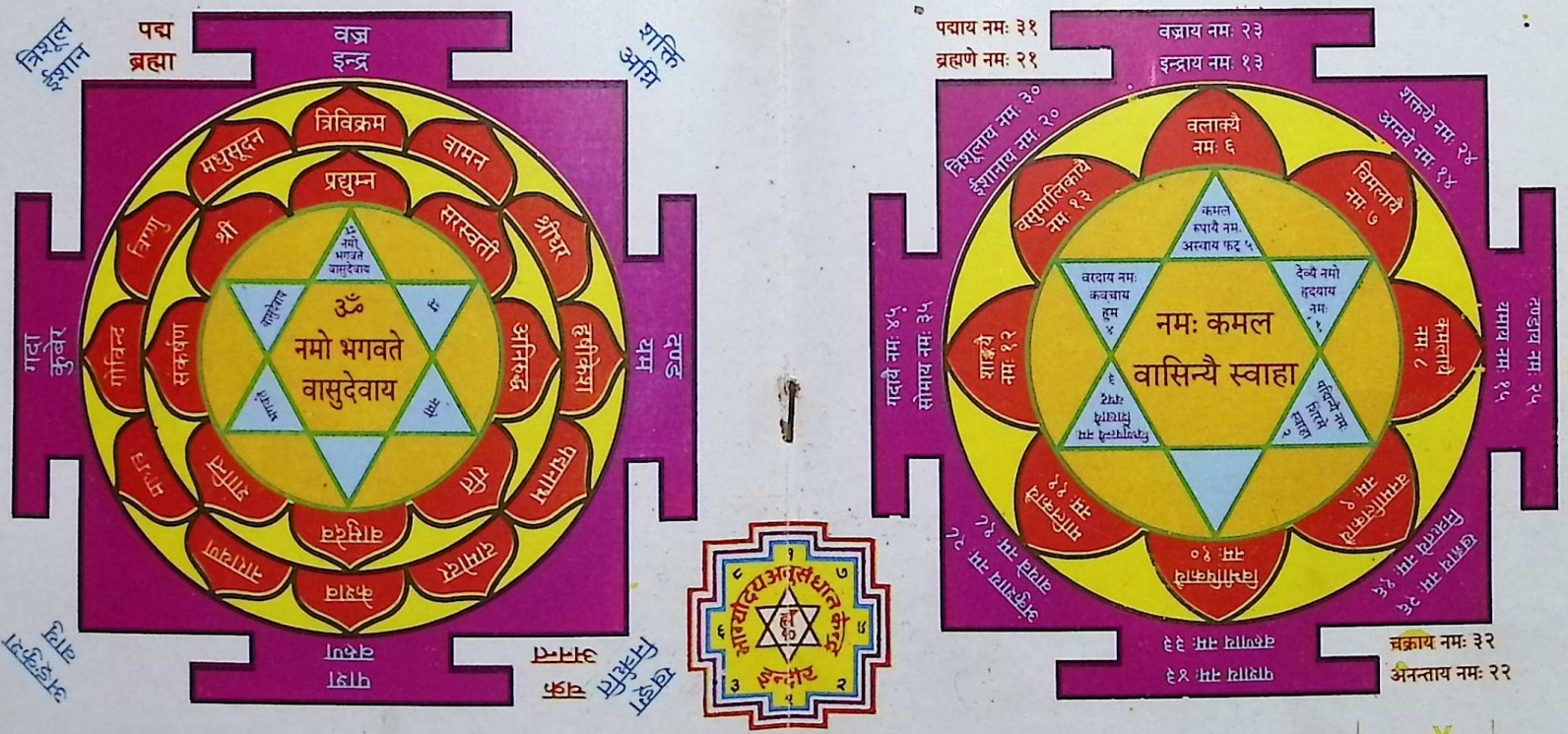
(६) **भाग्योदय-** सूर्य-नारायण साधना रहस्य

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्री लक्ष्मीनारायण-यंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं श्रीं श्रीं लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः



CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दुर्लभ यंत्रों का संग्रह

श्री लक्ष्मीनारायण यंत्र, श्री लक्ष्मी व्येकंटेश यंत्र, जैन यंत्र,
बौद्ध यंत्र, मुस्लिम यंत्र, लग्नयोग यंत्र, साई बीसा यंत्र,
वर-वशीकरण यंत्र, अजिविका प्राप्ति बीसा यंत्र,
कलह निवारण यंत्र, मुकदमा विजयी यंत्र,
सर्वकार्यसिद्धी बीसा यंत्र, श्री यंत्र,
वस्तु यंत्र आदि जन साधारण
के लिए उचित मूल्य पर उपलब्ध।

- स्थान -

भाग्योदय अनुसंधान केन्द्र

६६, जवाहर मार्ग, नन्दलालपुरा चौराहा.
इन्दौर-४५२ ००४
☎ ४७११६९

जीवन के पूर्ण कार्य कलाप, हानि-लाभ, जीवन-मरण, जय-पराजय, यश-अपयश, प्रकृति का प्रकोप, मन्दी घाटा आदि एवं शरीर का पूर्ण संचालन नवग्रहों पर आधारित है और इन सब का उपचार मंत्रों में समाहित है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्वीकार किया है कि इस प्रकार का ज्यामितीय रेखाचित्र अनूठा है, जो सृष्टि के सूक्ष्म से सूक्ष्म दार्शनिक रहस्यों का उद्‌घाटन करता है। विश्व के किसी भी अन्य क्षेत्र में इस प्रकार का गूढ़ार्थ-व्यंजक प्रतीक देखने में नहीं आया है।

भौतिक विज्ञान-वादी सृष्टि के मूल में 'अणु' को देखते हैं और योगी-ऋषियों ने सृष्टि के प्रत्येक स्वरूप में किसी न किसी विशिष्ट शक्ति-रूप के दर्शन किए हैं। उस शक्ति के "आकृति रूप यंत्र" से सृष्टि के छिपे हुए सम्पूर्ण स्वरूप का बोध होता है। इस श्री लक्ष्मी-नारायण यंत्र की उपासना करने से यह बौद्धिक तत्वों को व्यक्त करने लगता है, जिनसे चित शक्ति के विकास का ज्ञान होता है। फलतः उपासक को अनेक प्रकार की मानसिक शक्तियाँ प्राप्त होती हैं और वह विविध बौद्धिक गतिविधियों को नियंत्रित करने में सक्षम हो जाता है। इस प्रकार 'श्री लक्ष्मी नारायण यंत्र' केवल निष्क्रिय स्वरूप मात्र नहीं है, उसकी अपनी द्विगुणित शक्ति होती है, जिसका अनुभव वही करते हैं, जो इसकी उपासना करते हैं।

रूप ही अपनी सूक्ष्म अभिव्यक्ति में ध्वनि (मंत्र) है और उससे स्थूल अभिव्यक्ति में "यंत्र" है। दोनों वास्तव में एक ही तत्व हैं। बाह्य रूप में "यंत्र" और "मंत्र" भिन्न अवश्य प्रतीत होते हैं, किन्तु वास्तव में वे एक-दूसरे के पूरक हैं। "यंत्र" का विश्लेषण करने पर किसी "मंत्र" के रूप में अनुभव किया जा सकता है और इसी प्रकार कोई भी "मंत्र" निर्दिष्ट "यंत्र" के रूप में देखा जा सकता है। इन तथ्यों की पुष्टि इस वैज्ञानिक निष्कर्ष से भी होती है कि प्रत्येक ध्वनि एक प्रकार से ज्यामितीय आकृति का निर्माण करती है। ध्वनि-मापक यंत्रों (मशीनों) के माध्यम से इस निष्कर्ष को आज सहज ही दृष्टिगत किया जा सकता है।

सर्व साधारण इस यंत्र का उपयोग और चमत्कारी प्रभाव के लिए दीपावली या पौष मास की संक्रांति को यदि रविवार और अष्टमी योग हो या गुरु-पुष्य या रवि पुष्य या इसके अभाव में किसी भी संक्रांति को रविवार के दिन अथवा संक्रांति न पड़े तो फिर किसी भी महीने के शुक्ल-पक्ष में रविवार अष्टमी के दिन ब्रह्म-मुहूर्त में उठकर स्नानादि क्रियाओं से निवृत्त होकर आस्थापूर्वक, शुद्ध, शान्त स्थान पर पूर्वाभिमुख बैठकर धूप-दीप (अपने उल्टे हाथ की ओर) जलाकर पूजन करना चाहिए।

तंत्रोक्त लक्ष्मी-विष्णु साधना

तांत्रिकों के दो वर्ग हैं– एक शिष्ट जो सदाचार, तप और तपस्या से सिद्धि प्राप्त करते हैं और अपना-अपना मनोरथ पाते हैं। दूसरे अघोर सम्प्रदाय के तांत्रिक हैं, जिन्हें इन ज्ञात साधनों से सिद्धि मिलती है। सिद्धियाँ दोनों स्थितियों में मिलती

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हैं। दूसरी स्थिति भिन्न है। अघोर सम्प्रदाय के तांत्रिक जितने सहयोगी होते हैं, उससे ज्यादा घातक भी। दोनों ही स्थितियों में हमें ढोंगी साधुओं और अघोरी तांत्रिकों से बचना चाहिए।

शास्त्रों में समझाया गया है कि समुद्र (जल तत्व) से लक्ष्मीजी के रूप का उदय हुआ और वे ही इस समस्त जगत की रचना करने वाली हैं। वे सर्वत्र व्याप्त होती हैं और अपने साधकों पर स्थिर कृपा करने के लिए सदा अपने पति के साथ विराजमान रहती हैं। कहने का उद्देश्य केवल इतना है कि इन सबका अनुष्ठान श्री लक्ष्मी नारायण ही हैं।

मंत्रों में लक्ष्मी-नारायण को प्रभावित करने का विशेष गुण निहित है। प्रारब्ध में जिन्हें धन सुलभ नहीं हो पाता है, उन्हें मन्त्रोच्चार से इन्हें प्रसन्न करना चाहिए। अपनी कार्य सिद्धि हेतु व्यक्ति को सार्थक मंत्रों का चयन करना चाहिए। यदि मंत्र का प्रभाव न दिखलाई दे तो इसमें मंत्र का दोष नहीं निकालना चाहिए। मंत्र का उच्चारण भी शुद्ध हो। एक निश्चित लय-ताल पर तथा शुद्ध उच्चारण के साथ कहा गया मंत्र हमारे शरीर में स्थित विभिन्न चक्रों को स्पन्दित करने की क्षमता रखता है। यह स्पन्दन चुम्बकीय विद्युत में शक्ति उत्पन्न करके निक्षेपित करता है। वैज्ञानिक भाषा में इस चुम्बकीय विद्युत शक्ति को कोई भी नाम दे देते हैं। मंत्र का मूल आधार स्वर तथा नाद है। किसी बीमार को दर्द में कराहते तो आपने अवश्य ही सुना होगा। यह कराह प्रत्येक व्यक्ति की एक सी होती है, चाहे वह अंग्रेज हो, चाहे वह मुसलमान हो, चाहे वह अफ्रीका का हो, चीन का हो अथवा और कोई। कराह की इस ध्वनि विशेष से जो शरीर में स्पन्दन होता है, उससे उनके शारीरिक अवयव शिथिल होते हैं, फलस्वरूप उसे दर्द से थोड़ी राहत मिलती है। यह कराह का स्वर अथवा नाद भी तो एक मंत्र है।

तंत्र-मंत्र-यंत्र विज्ञान के पीछे अविश्वास तथा उसके लुप्त प्रायः होने के प्रमुख कारण हैं– हमारा अपना स्वार्थ, अपनी ही सर्वोच्चता बनाए रखने का दर्प तथा इन्हें स्वयं पचाकर सर्व सुलभ न करवाने का छल और इन सबसे ऊपर इस विज्ञान के प्रति हमारी अज्ञानता।

"मंत्र" उसे कहते हैं, जिसका मनन करने से साधक के सभी (भौतिक, दैविक, आध्यात्मिक) संकटों से प्राण (रक्षण) होता है। प्रत्येक नाम का अर्थ समझते हुए पाठ करना मनन है। साधक को शब्दार्थ के अनुसार ही फल मिलता है।

१. पटल, २. पद्धति ३. कवच, ४. सहस्त्र-नाम और ५. स्त्रोत - ये देवोपासना के ५ अंक हैं। "कवच" देवता का शरीर, पटल उसके नेत्र, पद्धति उसके हाथ, सहस्त्र नाम मुख और स्त्रोत देवता के पैर हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पद्धति के अनुसार पूजा करने के बाद पटल, कवच, सहस्त्र नाम और स्त्रोत का पाठ करने से देवता की उपासना सर्वांग पूर्ण होती है। इनमें से किसी को छोड़ देने से उपासना अंग-हीन रह जाती है।

इसलिए मंत्र उपासना ही कलयुग में पूर्ण फलदायी होती है। क्योंकि ध्वनियों के समूह को मंत्र कहते हैं। मंत्र वह विज्ञान या विधा है, जिससे शक्ति का उद्‌भव होता है। मंत्र का बार-बार जाप करने पर शब्दों के पारस्परिक संघर्ष के कारण वातावरण में एक प्रकार की विद्युत तरंगें उत्पन्न होने लगती हैं तथा साधक की इच्छित भावनाओं को बल मिलने लगता है। फिर वह जो चाहता है वही होता है। मंत्र साधन द्वारा देवी-देवता अपने वश में हो जाते हैं और मंत्र योग की सिद्धि प्राप्त होने से साधक को संसार में समस्त वैभव सुलभ हो जाते हैं। श्रद्धा, भक्ति और विश्वास से की गई साधना कभी निष्फल नहीं होती है।

"यंत्र" सब सिद्धियों का द्वार है तथा देवताओं का आवास गृह है, जिसमें अपने-अपने स्थान, दिशा, मण्डल, कोण आदि के अधिपति व्यवस्थित रूप से आल्हादित होकर विराजे रहते हैं, मध्य में उच्च सिंहासन पर प्रधान देवता प्राण-प्रतिष्ठित होकर पूजा पाते हैं। यंत्र-मंत्र का रचनात्मक शरीर है, जिसमें अनुष्ठेय कर्मकाण्ड की सम्पूर्ण प्रक्रिया सूक्ष्म रूप में ठीक उसी प्रकार छुपी रहती है, जिस प्रकार से नक्षे में भवन तथा बीज में वृक्ष छिपा रहता है।

यंत्रों के दर्शन मात्र से साधक अभीष्ट मनोरथ को पा लेता है। श्री यंत्र, श्री लक्ष्मी-नारायण यंत्र, कुबेर यंत्र, गायत्री यंत्र, भैरव यंत्र, श्री बगला मुखी यंत्र आदि ऐसे ही यंत्रों की श्रेणी में आते हैं, जिनके दर्शन आज शुभ फलों को देने वाले कहे गए हैं। शास्त्रकारों ने इस बात पर जोर दिया है कि जिस प्रकार शरीर और आत्मा में कोई भेद नहीं होता, उसी प्रकार से यंत्र और देवता में कोई भेद नहीं होता है। फलतः यंत्र की पूजा किये बिना देवता प्रसन्न नहीं होते।

संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि मंत्र की तरह यंत्र में भी अनन्त शक्तियों का भण्डार होता है।

मंत्र-यंत्र विधि क्रम

'मंत्र-यंत्र साधना में सामान्यतः जो विधि अपनाई जाती है, उसकी मूलभूत बातों का ध्यान रखना आवश्यक है, जो निम्न प्रकार है :-

१. स्थान पवित्र, शुद्ध एवं स्वच्छ होना चाहिए। घर में एकांत, शांत, जहाँ ज्यादा आवाज न पहुँचे, ऐसी जगह उपासना गृह रखना चाहिए। यदि साधक के मकान के ईशान कोण (उत्तर-पूर्व के कोने) में पूजा स्थल

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हो तो सर्वश्रेष्ठ रहता है। इस स्थान में मंत्र बारम्बार प्रतिध्वनित होता है।

२. श्री लक्ष्मी नारायण की प्रतिमा का चित्र या यंत्र पश्चिम या दक्षिण मुख स्थापित करना चाहिए। साधक 'पूर्व' या 'उत्तर मुख' होकर पद्मासन में बैठकर संयत-मन और जितेन्द्रिय होकर जाप करें। यंत्र खड़ा रखें।

३. यंत्र की प्राण-प्रतिष्ठा करना चाहिए। प्राण प्रतिष्ठा की सर्वाधिक सरल विधि यह है कि शुभ दिन के एक दिन पूर्व यंत्र को कच्चे दूध, दही, गंगा जल, शहद की बूँदे तथा तुलसीजी के पत्ते डाल कर पात्र में रख दें। अगले दिन यंत्र को शुद्ध जल से स्नान कराकर पीले कपड़े पर प्रतिष्ठित कर दें। निम्न मंत्रों का उच्चारण ९-९ बार करें।

१ "ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हों
ॐ क्षं सं हं सः ह्रीं ॐ आं ह्रीं
ॐ आं ह्रीं क्रौं आसां यन्त्रेषु प्राणा इह प्राणाः।
सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक्चक्षुः
श्रोत्र घ्राण जिह्वा पाणि पाद पायूपस्थानि
इहैवागत्य सुखम् चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

२. गणेश मंत्र-- ॐ गं गणपतये नमः।

३. गुरु मंत्र-- ॐ ब्रह्मं बृहस्पतयै नमः
या अपने गुरु से प्राप्त किया मंत्र

४. नव ग्रह मंत्र--
ब्रह्मा मुरारिः त्रिपुरान्तकारी, भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनि राहु केतवः, सर्वे ग्रहा शान्तिकरा भवन्तु॥

धूप-दीप, पुष्प, तिलक, नैवैद्य श्रद्धा से अर्पित करें। फिर लक्ष्मीनारायण मंत्र की अपनी नियत संख्यानुसार जाप करें।

यहाँ यह स्पष्ट कर दूँ कि प्राण-प्रतिष्ठा करने की यह अत्यन्त सूक्ष्म विधि है। विधि-विधान से यंत्र की प्राण-प्रतिष्ठा भी की जा सकती है।

४. "यंत्र" की पूजा करने से काम-क्रोधादि से उत्पन्न सब दोष नियंत्रित होकर देवता प्रसन्न होते हैं। यंत्र के बिना पूजा करने से श्री लक्ष्मी-नारायण प्रसन्न नहीं होते हैं। यंत्र के ज्ञात पण्डितों का कथन

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

है कि दु:ख का नियंत्रण करने से "यंत्र" नाम पड़ा है। "यंत्र" से पूजा करने से वह पूजा सर्व-प्रधान पूजा मानी जाती है। अत: यंत्र होना आवश्यक है।

५. प्रत्येक मंत्र के जाप का समय (प्रतिदिन) एवं संख्या निर्धारित होना चाहिए। जप संख्या का उच्चारण शुद्ध एवं धीमा (सिर्फ स्वयं सुन सकें) होना चाहिए। सबसे अच्छा मानस ज़प करना चाहिए। मानस जप में होंठ और जीभ नहीं हिलती, अपितु मन्त्रार्थ का चिन्तन करते हुए मन से ही मंत्र की बार-बार आवृत्ति होती है। मंत्र जाप के समय में फेर-फार नहीं करना चाहिए। इससे ४१ दिनों में प्रभाव परिलक्षित होने लगता है। यह अनुभूत है।

६. जब तक साधना चले तब तक दीप एवं अगरबत्ती प्रज्ज्वलित रहना चाहिए। घी एवं सरसों के तेल का दिया अवश्य रखना चाहिए। घी (गाय का) का दीया अपने उल्टे हाथ की ओर तथा तेल का दीया अपने सीधे हाथ की ओर प्रज्ज्वलित करना चाहिए। घी का दीया वैभव प्रदान करता है तथा तेल का दिया पापों का क्षय करता है। दीपक की बत्तियाँ सम संख्या २, ४, ६, ८ में न होकर विषम होना चाहिए। दीपक को सीधा भूमि पर न रखें, उसके नीचे पाट या अक्षत रखें। यह मेरे स्वयं का अनुभूत प्रयोग है कि चित्र एवं यंत्र पर रत्नों की माला, फूल के एवज में चढ़ाई जावे तो असंख्य बार प्रभाव बढ़ जाता है।

७. मंत्र की उपासना ध्यान, पूजन एवं जप श्रद्धा व विश्वासपूर्वक करना चाहिए।

८. विष्णु को तुलसी, मालती, गुलाब, कनेर, चम्पा, कमल के पुष्प, पीले फूल, पीले वस्त्र, पीले रत्न सर्वाधिक प्रिय है। "गौतमीय तंत्र" के अनुसार रक्त-चन्दन, रक्त पुष्प, बिल्व-पुष्प, धतूरा, आक, अशोक, कचनार, जूही, विष्णुजी पर चढ़ाना निषिद्ध है। चम्पा पुष्प सबसे प्रिय है। अक्षत द्वारा विष्णु पूजा न करें, इस कथन का आशय यह है कि पुष्पादि के अभाव में केवल चावल (अक्षत) द्वारा विष्णु की पूजा न करें। इसका आशय यह नहीं है कि अक्षत का प्रयोग नहीं होता। (हिन्दी तन्त्रसार पृष्ठ ३८९) विष्णु पूजा में केवल अक्षत (अकेले चावल) का प्रयोग न करने का विधान है, अर्घ्यादि में अक्षत का प्रयोग करते

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हैं। अर्घ्य में गंध, पुष्प, चावल, जौ, कुशाग्र, तिल, सर्षप (सरसों), दूर्वा सम्मिलित होते हैं।

९. प्रातःकाल की संध्या ताराओं के रहते की जाना चाहिए, यह उत्तम है। तारे छिप जाने पर की जाने वाली संध्या मध्यम तथा सूर्योदय के बाद की संध्या कनिष्ठ कहलाती है। इसी प्रकार सांझ की संध्या सूर्यास्त से तीन घटि पहले की जाय तो उत्तम, ताराओं के निकलने से पूर्व मध्यम तथा ताराओं के छा जाने पर की जाने वाली संध्या कनिष्ठ मानी जाती है। संध्या का तात्पर्य तन, मन और वाणी से ईश्वर-स्वरूप होना है।

१०. श्री लक्ष्मी-नारायण की पूजा में पीत चन्दन या केसर का तिलक अनामिका से माथे पर लगाना चाहिए। पीली वस्तुएँ लक्ष्मी-नारायण को अति प्रिय हैं।

११. **करमाला** अँगुलियों पर किये जाने वाले जप को कर माला कहते हैं। यह दो प्रकार का होता है। एक तो अंगुलियों से गिना जाता है और दूसरा उनके पर्वों से। शास्त्र दूसरे प्रकार के जप का अनुमोदन करता है। उसके नियम व विधि इस प्रकार हैं।

"जप करते समय अँगुलियाँ अलग-अलग नहीं करना चाहिए। इससे जप निष्फल हो जाता है। अँगुलियों को मिलाकर हथेली की तरफ कुछ झुका कर जप करना चाहिए।"

अंगुली के अग्रभाग से पर्व की लकीर और सुमेरु का उल्लंघन नहीं करना चाहिए। इससे जप निष्फल हो जाता है। मध्यमा का मूल तथा बीच का पर्व सुमेरु कहा जाता है।

"अनामिका अंगुली के मध्य के पर्व से शुरू करके क्रम से कनिष्ठ अंगुली के मूल पर्व से होते हुए तर्जनी अंगुली के मूल तक जाना होता है। यहाँ तक १० पर्व हो जाते हैं। इन पर अंगूठे से जप करना चाहिए। मध्यमा का मूल और मध्य के पर्व सुमेरु का उल्लंघन नहीं करना चाहिए। पुनः जपते समय सुमेरु के नीचे से अंगूठा ले जाना होता है।"

१०८ मंत्र जप के लिये १० बार इस प्रकार करें। और आठ बार की विधि इस प्रकार है–

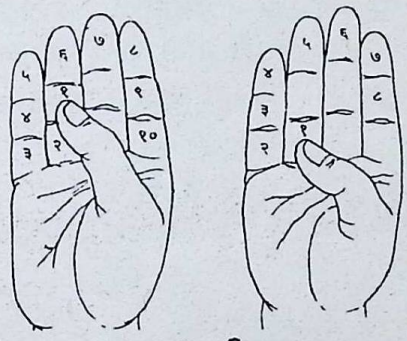
"अनामिका अँगुली के मूल पर्व से शुरू करना होता है और क्रम से कनिष्का अँगुली के मूल पर्व से होते हुए तर्जनी अंगुली के बीच के पर्व तक जाना होता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यहां तक ८ पर्व हो जाते हैं। इन पर अंगूठे से जप करना चाहिए। तर्जनी का मूल, मध्यमा का मूल तथा मध्य और अनामिका के मध्य पर्व पर जप वर्जित है।"

जिन साधकों को ज्यादा जप करना है, उन्हें रुद्राक्ष, कमलगट्टे, मूंगा, स्फटिक के १०८ मनकों (सुमेरु अलग) की माला को धागे या स्वर्ण तार या रजत तार में गूँथ कर उपयोग करना चाहिए। मणियों के मध्य गाँठ देना या नहीं देना अपनी इच्छा पर निर्भर करता है। दोनों शास्त्र सम्मत हैं। जप माला से करना चाहिए। मंत्र की शक्ति का अनुभव करने के लिए कम से कम एक माला नित्य करना ही चाहिये। अपनी सुविधानुसार १, ३, ५, ७, ९ माला का जप किया जा सकता है।



(अ) चित्र (ब)

एक माला पूरी होने पर सुमेरु का उल्लंघन नहीं किया जाता, बल्कि उसे मस्तक तथा नेत्रों से स्पर्श करके पीछे की तरफ उल्टा कर पुनः जप आरम्भ कर दिया जाता है।

माला जपते समय तर्जनी उंगली मनकों पर स्पर्श नहीं होना चाहिए।

सामूहिक साधना में या जहाँ और व्यक्तियों का आना-जाना हो तो माला गोमुखी में रखी जानी चाहिये। एकांत स्थान होने पर खुले रूप में माला से जपा जा सकता है।

कभी भी जप या माला फेरते समय न तो स्वयं हिलें और न माला हिलायें। हाथ (माला वाले) को हृदय के सामने रख कर जप करना चाहिए। परिवार में प्रत्येक साधक की जप करने की माला एवं आसन अलग-अलग होना चाहिए। जप की माला को पहिना भी जा सकता है।

रुद्राक्ष की माला का फल अनन्त गुना मिलता है। लक्ष्मी-नारायण मंत्रों का जाप तुलसी-माला से नहीं करना चाहिए, क्योंकि यह मेरा अनुभव है कि साधना का फल त्वरित नहीं मिलता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

माला में १०८ दानें क्यों? अंक ९ का महत्व क्यों?

सब कार्यों में काम आने वाली माला में १०८ दाने का भी वैज्ञानिक आधार है।

"एक पल में हमारे ६ श्वास निकलते हैं, ढाई पल या एक मिनिट में १५, एक घण्टे में ९०० इस तरह २४ घण्टे में २१६००, इनका जोड़ २ + १ + ६ + ० + ० + ० = ९ होता है।

"प्रकृति विज्ञान के अनुसार नक्षत्र २७ होते हैं। प्रत्येक नक्षत्र के चार पाद होते हैं। २७ को चार से गुणा करने से संख्या १०८ ही होती है। इनका जोड़ नौ होता है। यह संख्या एक प्रकार से सारे संसार का प्रतिनिधित्व करती है।"

"ब्रह्म अंक शास्त्रों में ९ माना गया है, जिसका परिवर्तन नहीं होता। जैसे ९ x १ = ९, ९ x २ = १८, १ + ८ = ९, ९ x ३ = २७, २ + ७ = ९, ९ x ४ = ३६, ३ + ६ = ९, ९ x ५ = ४५, ४ + ५ = ९ आदि।"

"युगों की संख्या भी ऐसी ही है। सतयुग में १७,२८,००० वर्ष हैं, जिनका योग १ + ७ + २ + ८ = १८ और १ + ८ : ९ होता है। त्रेता युग में १२,९६,००० वर्ष हैं। इन अंकों का योग १ + २ + ९ + ६ = १८ (१ + ८ = ९) होता है। द्वापर युग में ८,६४,००० वर्ष हैं। इन अंको का योग भी ८ + ६ + ४ = १८ (१ +८ = ९) होता है। कलियुग में ४, ३२,००० वर्ष हैं। इसके अंकों की संख्या का योग ४ + ३ + २ = ९ होता है। कल्प में ४,३२,००,००,००० वर्ष होते हैं। इनके अंकों का जोड़ भी ९ होता है। ब्रह्मा का एक वर्ष ३१,१०,४०,००,००००० वर्षों का होता है इसके अंकों का योग भी वही ९ है।"

"ग्रह ९ होते हैं, नवार्ण मंत्र के वर्षों की संख्या भी ९ होती है। नक्षत्र २७ होते हैं। शरीर के छिद्रों की संख्या भी ९ है। नवरात्रि में ९ दिन का अनुष्ठान किया जाता है। कार्तिक शुक्ला नवमी को भी अक्षय नवमी होती है। यह ९ का अंक ब्रह्म का प्रतीक है।"

इसको हमारे धर्मशास्त्रों में अत्यन्त शुभ माना गया है। इसी शुभ संख्या को ध्यान में रखते हुए महर्षि व्यासजी ने पुराण के १८ उप-पुराण लिखे, महाभारत के पर्वों की संख्या १८ रखी। गीता के अध्यायों की संख्या १८ है। भागवत के श्लोकों की संख्या १८,००० है।"

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

"जीवन एवं सृष्टि का प्राणाधार सूर्य है, जो कि एक मास में एक वृत्त पूरा कर लेता है। खगोलीय वृत्त ३६० अंशों का निर्मित है और यदि कलाएं बनाई जाएं तो ३६० x ६० = २१,६०० सिद्ध होती हैं। इनका जोड़ ९ ही होता है।"

अंक-विज्ञान में भी ९ अंक का महत्व है। इसलिए ईश्वर उपासना के लिए १०८ की संख्या तथा ९ की संख्या अत्यन्त शुभ है और ९ की संख्या ब्रह्म अंक है।

अतः मेरे मत में मंत्रों का ९–९ बार जाप करने से भी पूर्ण सफलता मिलती है।

जप में ऊँगलियों का उपयोग किया जाता है, वह कर माला जप कहा जाता है। करमाला करते समय ऊँगलियाँ अलग-अलग न रहें, बल्कि एक-दूसरे के पास परस्पर जुड़ी रहें।

जिन साधकों को ज्यादा जप करना है, उन्हें रुद्राक्ष, कमलगट्टे, मूँगा, स्फटिक के १०८ मनके (सुमेरु अलग) की माला धागे या स्वर्ण तार या रजत तार में गूँथकर उपयोग करना चाहिए। माला जपते समय तर्जनी ऊँगली का मनकों पर स्पर्श नहीं होना चाहिए तथा सुमेरु को लांघना नहीं चाहिए।

कभी भी जप या माला फेरते समय न तो स्वयं हिलें और न माला हिलायें। हाथ को हृदय के सामने ऊँगलियों को कुछ टेढ़ी कर ही जप करना चाहिए।

हर साधना करने की माला अलग-अलग होना चाहिए। जप की माला को पहिना जा सकता है। रुद्राक्ष माला का फल अनन्त गुना मिलता है।

१२. कम्बल, रेशमी, आसन (पीला या लाल) का उपयोग करना चाहिए। ये दोनों आसन सर्वश्रेष्ठ हैं। लकड़ी या पाषाण (पत्थर) का आसन उपयोग में नहीं लाना चाहिए।

१३. जप का फल घर में बैठकर करने से एक गुना, तीर्थ में हजार गुना, पर्वत पर दस हजार गुना, नदी के तट पर लाख गुना, देवालय में करोड़ गुना तथा शिव बेलपत्र के पेड़ के नीचे (जो शक्ति पीठ में स्थित हो) अनन्त गुना मिलता है। (नलखेड़ा स्थित माँ बगलमुखी मंदिर में बेलपत्र एवं चम्पा के पेड़ है)

१४. दीपावली, होली, ग्रहण पुष्य (रवि या गुरु) नक्षत्र नव-रात्रि (दोवो) आदि शुभ दिन नौ माला से मंत्र का जप करना चाहिये और अंतिम माला में हवन सामग्री से होम करें। गुरुवार एवं रविवार को मंत्र के उपयोग से विशिष्ट फल मिलता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१५. काम, क्रोध, मोह, लोभ, मद, हिंसा, असत्य से जहाँ तक हो सके, बचना चाहिए।

१६. शुभ दिन ५ लौंग, ५ इलायची, कपूर एवं चुटकी भर सिन्दूर की भस्म अवश्य तैयार कर देवताओं के चित्रों, यंत्र आदि पर तथा स्वयं के माथे पर लगायें।

१७. पूजा घर में जहाँ तक हो सके एकाक्षी नारियल, श्री दक्षिणावर्त शंख, गोरोचन, बहेड़ा, श्वेतार्क-जड़, हाथा जोड़ी, स्यार सिंगी, काली हल्दी, गीदड़ सिंगी, बिल्ली की जेर आदि में से कुछ न कुछ अवश्य रखें।

मन्त्रार्थ

मंत्र साधारण शब्द या शब्दों का समूह नहीं है अपितु इसमें एक विशेष निहित शक्ति को समझना साधक के लिए आवश्यक होता है। साधक को चाहिए कि वह मंत्र के प्रत्येक अक्षर एवं शब्द के रहस्य को उसके अर्थ को, उसमें निहित शक्ति को समझे। सत्य युग, त्रेता और द्वापर इन तीन युगों में श्रुति और स्मृति के अनुसार पूजा होती थी। तन्त्रोक्त ध्यान और बीज मंत्र ही कलियुग में फलदायक हैं। वेद स्मृति और पुराण में जो बताये गये हैं, वे इस युग (कलियुग) में प्रशस्त नहीं हैं। बीज मंत्र कलियुग में शीघ्र फल देते हैं और इनका अणुबम के समान प्रभाव परिलक्षित होता है।

पहला और समस्त में समभाव से व्यापक शब्द "ॐ" है, जो महा-बीज है, क्योंकि यह अन्य सबका और सभी संयुक्त शब्दों का मूल है। बीज मंत्र वह मंत्र है, जिसमें केवल एक ही वर्ण हो।

प्रत्येक देवता का बीज होता है। इस प्रकार "क्रीं", "ह्रीं" और "रँ" के देवता क्रमशः काली, माया और अग्नि। किसी भी देवता या देवी की पूजा में जो मंत्र मुख्यतया प्रयुक्त होता है वह उसका "मूल मंत्र" कहा जाता है। इसकी ध्वनियों से उपासक की अस्थिर प्रवृत्तियाँ केवल नियमित ही नहीं बल्कि उसकी साधना शक्ति के फलस्वरूप उसमें भी देवता स्वरूप भी आविर्भूत होता है।

कुछ बीज मंत्र और उसमें निहित शक्ति स्वरूप तथा उसका रहस्य अग्रानुसार है:

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

"ॐ"

इसमें दो स्वर एक व्यंजन हैं :

अ	:	ब्रह्मा
उ	:	विष्णु
म	:	रुद्र (शंकर)

"गं"

यह गणपति बीज है :

ग	:	गणेश
अनुस्वार	:	दुःख हर्ता

अर्थ : श्री गणेश मेरे विघ्नों को, दुःखों को दूर करें।

उच्चारण – गम्

"श्रीं"

इसमें चार स्वर व्यंजन शामिल हैं :

श	:	महालक्ष्मी
र	:	धन - ऐश्वर्य
ई	:	तुष्टि
अनुस्वार	:	दुःखहरण

बीज का अर्थ– विश्वमाता। इस प्रकार श्रीं बीज का अर्थ है - धन, ऐश्वर्य, तुष्टि-पुष्टि की अधिष्ठात्री देवी महालक्ष्मी मेरे दुःखों का नाश करें।

उच्चारण – श्रीम्

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

"ह्रीं"

यह शक्ति बीज या माया बीज है।

ह	:	शिव
र	:	प्रकृति
ई	:	महामाया
अनुस्वार	:	दुःखहर्ता

इसका तात्पर्य हुआ - कल्याणकारी विश्वमाता मेरे दुःखों का निवारण करे।

उच्चारण – ह्रीम्

"दुँ"

यह दुर्गा बीज है।

द	:	दुर्गा
उ	:	रक्षा करना
अनुस्वार	:	दुःखहर्ता
नाद	:	विश्व माता।

तात्पर्य– माँ दुर्गे ! मेरी रक्षा करो।

उच्चारण – दुम्

"क्रीं"

यह काली, गोपाल, काम, परा-शक्ति बीज है। इसमें चार स्वर-व्यंजन शामिल हैं।

क	:	काली
र	:	ब्रह्म
ई	:	महामाया
अनुस्वार	:	दुःखहरण।
नाद	:	विश्वमाता

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ब्रह्म-शक्ति सम्पन्न महामाया काली मेरे दुःखों का हरण करें।

उच्चारण – क्रीम्

"हौं"

यह प्रसाद बीज है।

ह	:	शिव
औ	:	सदाशिव
अनुस्वार	:	दुःखहरण।

शिव तथा सदाशिव कृपा कर मेरे दुःखों का हरण करें।

उच्चारण – हौम्

"हूं"

इसे कूर्च या वर्म या महाकाल या निरन्जन बीज कहते हैं।

ह	:	शिव
ऊ	:	भैरव
अनुस्वार	:	दुःखहर्ता

असुर संहारक शिव मेरे दुःखों का नाश करें।

उच्चारण – हूम्

"ग्लौं"

ग	:	गणेश
ल	:	व्यापक रूप
औ	:	तेज
अनुस्वार	:	दुःख हर्ता

व्यापक रूप विघ्नहर्ता गणेश अपने तेज से मेरे दुःखों का नाश करें।

उच्चारण – ग्लौम्

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

"स्त्रीं"

इसे वधू बीज कहा जाता है।

स	:	दुर्गा
त	:	तारण
र	:	मुक्ति
ई	:	महामाया
अनुस्वार	:	दुःखहर्ता

दुर्गा-मुक्तिदाता, दुःखहर्ता, भवसागर तारिणी, महामाया मेरे दुःखों का नाश करें।

उच्चारण – स्त्रीम्

"क्षौं"

यह नृसिंह बीज है।

क्ष	:	नृसिंह
र	:	ब्रह्म
औ	:	ऊर्ध्वकेशी
अनुस्वार	:	दुःखहरण

उर्ध्वकेशी ब्रह्मस्वरूप नृसिंह भगवान् मेरे दुःखों को दूर करें।

उच्चारण – क्षौम्

"ऐं"

यह सरस्वती बीज है।

ऐ		सरस्वती
अनुस्वार		दुःखहर्ता

हे माँ सरस्वती ! मेरे दुःखों अर्थात् अविद्या का नाश कर।

उच्चारण – ऐम्

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

"क्लीं"

यह कामदेव का परिचायक है अर्थात् कृष्ण का।

क	कृष्ण अथवा काम
ल	इन्द्र
ई	तुष्टि भाव
अनुस्वार	दुःखहर्ता

कामदेव रूप श्रीकृष्ण मुझे सुख सौभाग्य दें।

उच्चारण – क्लीम्

"वं"

व	:	अमृत
अनुस्वार	:	दुःखहर्ता

हे अमृत स्वरूप सागर मेरे दुःखों को दूर करें।

उच्चारण – वम्

इसी प्रकार कई "बीज" हैं, जो प्रत्येक अपने आप में मंत्र स्वरूप ही हैं, जो निम्नानुसार हैं :–

शं	:	शंकर बीज
फ्रौं	:	हनुमत् बीज
ह्रीं	:	काली बीज
दं	:	विष्णु बीज
हं	:	आकाश बीज
यं	:	अग्नि बीज
रं	:	जल बीज
लं	:	भू या पृथ्वी बीज
ज्ञं	:	ज्ञान बीज
भ्रं	:	भैरव बीज

बीजार्थों से स्पष्ट है कि प्रत्येक शब्द में मंत्र है, जिसका एक निश्चित अर्थ है। निश्चित स्वरूप एवं शक्ति है।

"देव-मूर्तियाँ", यंत्र, मंत्र बहुत प्रकार के होते हैं। प्रत्येक "मूर्ति", "यंत्र", "मंत्र" विभिन्न सांकेतिक रहस्यों को सूचित करते हैं। विविध वर्णों के ही समान विभिन्न

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

फलों, पुष्पों, वनस्पतियों, शस्त्रास्त्रों, प्राणियों और शरीर के अंगों के भी सांकेतिक प्रयोग ऋषियों द्वारा बहुधा किए गए हैं। इन सबके रहस्य को जान कर प्राचीन् "मूर्ति कला" को देख कर कुछ लोग वास्तविक अर्थ को नहीं समझ पाते हैं और भ्रम में पड़ जाते हैं। किसी मूर्ति कला से ब्रह्म-ज्ञान, तो किसी से इतिहास का, किसी से काव्य का, किसी से व्यावहारिक ज्ञान मिलता है। मूर्ति के समान ही "यंत्र कला" में भी सांकेतिक रूप से यही विषय स्पष्ट हुए हैं।

श्री लक्ष्मीनारायण तन्त्रोक्त साधना

साधना का प्रारम्भ श्री गणेश से ही होता है, क्योंकि साधक को पग-पग पर कठिनाइयाँ आती हैं और इन कठिनाइयों का निराकरण एक-मात्र श्री गणेश ही कर सकते हैं। अतः सर्वप्रथम श्री गणेश के मंत्र का ९ बार जाप करना चाहिए :

ॐ गं गणपतये नमः।

इसके बाद गुरु मंत्र का ९ बार जाप करना चाहिए–

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः, गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात्परब्रह्म, तस्मै श्री गुरवेनमः॥

इसके बाद नवग्रह मंत्र का ९ बार जाप करना चाहिए–

ब्रह्मा मुरारिः त्रिपुरान्तकारी, भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनि राहु केतवः, सर्वे ग्रहा शांतिकरा भवन्तु॥

उपरोक्त के बाद लक्ष्मी-नारायण के मंत्रों में से इच्छानुसार जाप करें–

१. श्री लक्ष्मीनारायण चतुर्दशाक्षर मंत्र

"ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं लक्ष्मी-वासुदेवाय नमः

इस मंत्र से लक्ष्मी-नारायण की उपासना करें।

यह मंत्र कल्प-वृक्ष के समान है। वासुदेव की पूजा पद्धति के अनुसार इस मंत्र की पूजा भी करें।

"विद्युत जैसी शोभायमान् लक्ष्मी और चन्द्रमा जैसे मनोहर वासुदेव परस्पर स्नेह के रस से एकता के भाव को प्राप्त हैं। वे विविध रत्नों से युक्त आभूषणों द्वारा अलंकृत हैं। लक्ष्मीजी के हाथ में विद्या, पद्म, दर्पण और मणि-मय कलश हैं एवं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नारायण पद्म, गदा, शंख और चक्रधारी हैं। ये लक्ष्मी-नारायण हमें सदा अतुल श्री प्रदान करें।"

विशेष सिद्धि के लिये इस मंत्र के पुरश्चरण में १४ लाख बार जपकर घृत-मधु-शर्करा से युक्त दशांश होम करें।

२. श्री हरि-हर षोडशाक्षर मंत्र

"ॐ ह्रीं हौं शंङ्कर नारायणाय नमः हौं ह्रीं ॐ"

इस मंत्र की पूजा विधि यह है कि पहले प्रातः - क्रियादि कर विष्णु या शिव-मन्त्रोक्त साधना करें।

"हाथों में शूल, चक्र, पाञ्चजन्य शंख एवं अभय मुद्रा धारण करने वाले भगवान् हरि-हर का आधा शरीर शंकर के और आधा विष्णु के अपने-अपने आभूषणों से अलंकृत है। उनकी मैं वन्दना करता हूँ।"

विशेष सिद्धि हेतु इस मंत्र के पुरश्चरण में एक लाख जप-कर घृत युक्त तिल-चावल से दशांश होम करने के निर्देश दिये हैं।

३. द्वादशाक्षर मंत्र

"ॐ नमो भगवते वासुदेवाय"

यह द्वादशाक्षर मंत्र कल्प तरु के समान है। यह मंत्र स्वयं सिद्ध है।

"शरत्-कालीन कोटि चंद्रों के समान उज्ज्वल और मधुर कांति वाले, शंख-चक्र-गदा-पद्मधारी, चतुर्भुज एवं श्वेत पद्म पर विराजमान, अपनी कांति से सारे संसार को मुग्ध करने वाले भगवान् वासुदेव की मैं वन्दना करता हूँ। वे गदा, हार, कुण्डल, मुकुट और कंकणादि आभूषणों से विभूषित हैं। वक्षः स्थल पर श्रीवत्स चिह्न और गले में कौस्तुभ मणि धारण किए हैं। श्रेष्ठ मुनि लोग उनकी स्तुति करते रहते हैं।"

४. श्री महालक्ष्मी मंत्र

नमस्तेऽस्तु महामाये श्री पीठे सुरपूजिते।
शंख, चक्र, गदा हस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तुते।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

५. श्री विष्णु-मंत्र

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं।
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं। (योगिभिः + ध्यानगम्यं)
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥

जिसकी आकृति अतिशय शान्त है, जो शेषनाग की शैय्या पर शयन किये हुए हैं, जिसकी नाभि में कमल है, जो देवताओं का भी ईश्वर और जो सम्पूर्ण जगत् का आधार है, जो आकाश के सदृश सर्वत्र व्याप्त है, नीलमेघ के समान जिसका वर्ण है, अतिशय सुन्दर जिसके सम्पूर्ण अंग हैं, जो योगियों द्वारा ध्यान करके प्राप्त किया जाता है, जो सम्पूर्ण लोकों का स्वामी है और जो जन्म-मरण रूप भय का नाश करने वाला है, ऐसे श्री लक्ष्मी पति, कमलनेत्र विष्णु भगवान् को मैं (सिर-झुकाकर) प्रणाम करता हूँ।

जीवन में आर्थिक, भौतिक तथा सभी प्रकार की पूर्णता प्राप्ति के लिए यह मंत्र महत्वपूर्ण माना गया है। यह मंत्र भी स्वयं सिद्ध है।

६. सप्त-विंशाक्षर महालक्ष्मी मंत्र

"ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद-प्रसीद
श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः।"

यह महालक्ष्मी का मंत्र है। यह सर्व सुख एवं सर्व सिद्धियाँ प्रदान करता है।

"सिन्दूर के समान देह की अरुण कांति, पद्म के ऊपर विराजमान, अनुपम सौन्दर्य-वती, इन्द्रनील, मणि, वलय, हार, कुण्डल और करधनी आदि आभूषणों से विभूषित, हाथों में रत्न-पूर्णपात्र, दो कमल और दर्पण लिए हुई, सेविकाओं से घिरी हुई, भगवान् विष्णु की प्रिया महालक्ष्मी का मैं ध्यान करता हूँ।

बेल गरी (फल) को कुटकर गाय के घृत में मिलाकर हवन करने से लक्ष्मी स्थिर हो जाती है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

७. अष्टा-विंशाक्षर महालक्ष्मी मंत्र

"ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद
श्रीं ह्रीं ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै नमः।"

उपरोक्त मंत्र सप्त विंशाक्षर के समान है, केवल अंतिम चरण में "ॐ" की वृद्धि की गई है ।

८. चिरस्थाई विपुल लक्ष्मी प्राप्त करने का मार्ग

ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं महादेवी महेश्वरी महामाया महामूर्ति महाधर्मेश्वरी अहिम् मुक्तामाला धरामाया महाभेदा महोदरी महाजननी जगन्माता महामुद्रोतनी अहिम्। ॐ ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः स्वाहा।

इस मंत्र से साधक श्री लक्ष्मीनारायण के चित्र का पूजन कर प्रतिदिन सफेद तिल, मेवा, शुद्ध घृत से हवन करें तो महालक्ष्मी चिरस्थाई हो जाती हैं, जो सात पीढ़ी तक रहती हैं। यह प.पू. गुरुजी का अनुभूत प्रयोग है।

९. अन्य मंत्र

१ "ॐ ह्रीं श्रीं श्रीं लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः।"

२ "ॐ महालक्ष्मी विद्महे विष्णु-पत्नी धीमहि
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्।"

३. "महादेव्यै विद्महे विष्णु-पत्न्यै धीमहि
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्।"

४ "महालक्ष्म्यै विद्महे महा-श्रियै धीमहि तन्नः
श्रीः प्रचोदयात्"

५. "ॐ महादेवी विद्महे विष्णु-पत्नी धीमहि तन्नो
लक्ष्मीः प्रचोदयात्।"

६. "ॐ ह्रीं श्रीं हर-हर स्वाहा।"

इस मंत्र की सामान्य पूजा से ४१ दिन में चमत्कारी प्रभाव मिलता है। अनुभूत प्रयोग है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

७. "ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महालक्ष्मी ममगृहे
आगच्छ-आगच्छ ह्रीं नमः।"

इस मंत्र को दीपावली, पुष्य नक्षत्र (गुरु या रवि) को कुंकुम या अष्ट गंध से चाँदी की थाली या बही खाते में लिखें और इसी रात्रि को कम से कम १२००० मंत्रों का जाप करें, तो वह व्यक्ति दौलत और ऋद्धि-सिद्धि को पाता है। यह अनुभूत मंत्र है।

८. "ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं श्रीमेव कुरु-कुरु वांछितमेव ह्रीं ह्रीं नमः।"

यदि व्यापार में घाटा चल रहा है तो इस मंत्र का जाप प्रातः काल १०८ बार करने से ४१ दिनों में प्रभाव परिलक्षित होकर लाभ होने लगता है। यह अनुभूत मंत्र है।

९. ॐ नमो भगवते श्री निवासाय
महाविष्णुरूपाय महालक्ष्मीभूमि सहित,
श्री व्यंकटेशाय नमः।

१०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं म्हीं महालक्ष्म्यै नमः

११. ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्धलक्ष्मी स्वाहा।

१२. "श्रीं हरयै नमः "

उपरोक्त मंत्रों में से चुनकर कोई भी साधक पूजा का आरम्भ शुभ दिन कर सकता है। पूजा के नियमों का पालन "मानस-जप" में लागू नहीं होता है। पूजा शुरू करने के पूर्व अपने इष्ट से माफ़ी माँग लेवें कि मैं बिना विधि-विधान के पूजा शुरू कर रहा हूँ, मैं अज्ञानी हूँ। आपको मेरी पूजा अवश्य ग्रहण करना ही है और पूजा शुरू कर दें। इसका प्रभाव ४१ दिनों में साधक स्वयं अनुभूत करें।

भगवान् श्री लक्ष्मीनारायणजी की आरती

पूजा के अन्त में आरती की जाती है। पूजन में जो त्रुटि रह जाती है, आरती से उसकी पूर्ति होती है। स्कन्दपुराण में कहा गया है :

"मन्त्रहीनं क्रियाहीनं यत् कृतं पूजनं हरेः।
सर्वं सम्पूर्णतामेति कृते नीरांजने शिवे॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

"पूजन मन्त्रहीन और क्रियाहीन होने पर भी नीराजन (आरती) कर लेने से उसमें सारी पूर्णता आ जाती है।"

आरती करने का ही नहीं, आरती देखने का भी बड़ा पुण्य लिखा है। हरिभक्ति विलास में एक श्लोक है—

"नीरांजनं च यः पश्येद् देवदेवस्य चक्रिणः।
सप्तजन्मनि विप्रः स्यादन्ते च परमं पदम्॥"

"जो देवदेव चक्रधारी श्री विष्णु भगवान् की आरती (सदा) देखता है, वह सात जन्मों तक ब्राह्मण होकर अन्त में परमपद को प्राप्त होता है।

विष्णुधर्मोत्तर में आया है—

"धूपं चारात्रिकं पश्येत् कराभ्यां च प्रवन्दते।
कुलकोटिं समुद्धृत्य याति विष्णोः परं पदम्॥"

"जो धूप और आरती देखता है और दोनों हाथों से आरती लेता है, वह करोड़ पीढ़ियों का उद्धार करता है और भगवान् विष्णु के परमपद को प्राप्त करता है।"

आरती में पाँच अंग होते हैं। प्रथम दीप माला के द्वारा, दूसरे जल युक्त शंख से, तीसरे धुले हुए पवित्र शुभ्रवस्त्र से, चौथे आम, तुलसी और पीपल आदि के पत्ते से और पाँचवें साष्टाँग दण्डवत् से।

यह कि "आरती" मूल रूप से मन्त्रोच्चारण के साथ केवल कष्ट-निवारक भाव से उतारी जाती रही है। प्रज्ज्वलित दीपक अपने इष्टदेव के चारों ओर घुमाकर उनकी सारी विघ्न-बाधा टाली जाती है। आरती लेने से भी यही तात्पर्य है- उनकी आर्ति (कष्ट) को अपने ऊपर लेना। बलैया लेना, बलिहारी जाना, बलि जाना, वारी जाना, न्यौछावर होना आदि सभी प्रयोग इसी भाव के द्योतक हैं। इसी रूप में छोटे बच्चों की माताएँ तथा बहिनें लोक में आरती उतारती हैं।

आरती करते समय घण्टा, शंख आदि बजते रहें तथा स्थापित देवता को कर्पूर-युक्त, घृत-दीपक से चार बार आरती उतारें। बाद में दो बार नाभि की, फिर एक बार मुख-मण्डल की तथा बाद में चरणों से लेकर सिर तक अर्थात् पूरे अंगों की सात बार आरती उतारें। इस प्रकार १४ बार श्री लक्ष्मीनारायण (अन्य देवताओं की भी) की आरती उतारें। पश्चात् शंख में या किसी शुद्ध ताँबे के पात्र में भरा हुआ जल देवता पर एक बार चारों ओर घुमाकर देवता के दायें और बायें दोनों ओर छोड़ें। बचे हुए जल को उपस्थित सभी भक्तगण एवं स्वयं पर छिड़कें। इस जल के छींटों से ब्रह्म हत्या आदि पातक नष्ट हो जाते हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्री विष्णु - वन्दना

सशंखचक्रं सकिरीट कुण्डलं
सपीतवस्त्रं सरसीरुहेक्षणम्।
सहारवक्षःस्थल कौस्तुभप्रियं।
नमामि विष्णुं शिरसा चतुर्भुजम्॥
अशेषसंसार विहारहीनः -
मादित्यगं पूर्णसुखाभिरामम्॥
समस्तसाक्षिं तमसः परस्ता-
न्नारायणं विष्णुमहं भजामि॥

श्री लक्ष्मी वन्दना

महालक्ष्मि नमस्तुभ्यं, नमस्तुभ्यं सुरेश्वरि।
हरिःप्रिये नमस्तुभ्यं, नमस्तुभ्यं दयानिधे॥

आरती

श्री लक्ष्मीनारायणजी

ॐ जय लक्ष्मी - विष्णो।
जय लक्ष्मीनारायण, जय लक्ष्मी-विष्णो।
जय माधव, जग्र श्रीपति, जय-जय-जय विष्णो। ॐ जय..॥
जय चम्पा सम वर्णे, जय नीरदकान्ते।
जय मन्द-स्मित-शोभे, जय अद्भुत शान्ते। ॐ जय..॥
कमल वराभय-हस्ते, शंखा, दिकधारिन्।
जय कमलालयवासिनि, गरुड़ासनचारिन्। ॐ जय..॥
सच्चिन्मयकरचरणे, सच्चिन्मयमूर्ते।
दिव्यानन्द-विलासिनि जय सुखमयं मूर्ते। ॐ जय..॥
तुम त्रिभुवन की माता, तुम सबके त्राता।
तुम लोक त्रय जननी, तुम सबके धाता। ॐ जय..॥
तुम धन-जन-सुख संतति, जय देने वाली।
परमानन्द-विधाता तुम हो वनमाली। ॐ जय..॥
तुम हो सुमति घरों में, तुम सबके स्वामी।
चेतन और अचेतन के अन्तर्यामी॥ ॐ जय..॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शरणागत हूँ, मुझ पर कृपा करो माता।
जय लक्ष्मी-नारायण नव-मंगल-दाता। ॐ जय..।

आरती पश्चात् प्रार्थना

(१) अच्युतं केशवं रामनारायणं,
कृष्णदामोदरं वासुदेवं हरिम्।
श्रीधरं माधवं गोपिका वल्लभं,
जानकी नायकं श्रीरामचन्द्रं भजे॥

(२) कर्पूर गौरं करूणावतारं,
संसार सारं भुजगेन्द्रहारं।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे,
भवं भवानी सहितं नामामि॥

(३) असित गिरि समं स्यात् कज्जलं सिन्धु पात्रे
सुरतरुवर शाखा लेखनी पत्रमुर्वी॥
लिखति यदि गृहित्वा शारदाः सर्वकालम्
तदपि तव गुणानां
ईश पारं न याति।

(४) आवाहनं न जानामि न जानामि तवार्चनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरि।
मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि।
यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे॥
पापोऽहं पापकर्माऽहं पापात्मा पाप सम्भवः।
त्राहि मां लक्ष्मीनाथोहि सर्व पाप हरो भव॥
अपराध सहस्त्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरी॥

(५) ॐ या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः।
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः।
श्रद्धा संता कुलजनः प्रभवस्य लज्जाम्
तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पुष्पाञ्जलि

हरिः ॐ यज्ञेन यज्ञमजयन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्व्वे साद्धयाः सन्ति देवाः।

नाना-सुगन्धि पुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तं गृहाण परमेश्वरी॥

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

१. शक्ति अङ्क (कल्याण)
२. श्री विष्णु पुराण (कल्याण)
३. देवता अङ्क (कल्याण)
४. मन्त्र-घोष
५. महा निर्वाण तन्त्र
६. प्राण तोषणी तंत्र
७. मंत्र-कल्पतरु
८. तंत्र-कल्पतरु
९. तंत्र-संग्रह
१०. श्री श्री विद्या-सतव-मञ्जरी
११. श्री चक्र-रहस्य
१२. श्री सुक्त - रहस्य
१३. अमृतेश्वरी-विद्या
१४. राम अंक (कल्याण)
१५. तंत्र-विद्या
१६. मंत्र-विद्या
१७. हिन्दी तन्त्र-सार
१८. हिन्दी मन्त्रमहार्णव
१९. कल्याण-कुन्ज
२०. मंत्र-सागर
२१. प्रायोगिक-तंत्र
२२. मंत्र-महाविज्ञान खण्ड - १, २, ३, ४
२३. लक्ष्मी-तंत्र
२४. कमला कल्पतरु
२५. महादेवी-लक्ष्मी
२६. मंत्र-रहस्य
२७. लघु-विद्यानुवाह
२८. मंत्र-महोदधि
२९. अष्ट-देवी- आराधना
३०. तन्त्र-शक्ति
३१. यंत्र शक्ति
३२. मंत्र शास्त्र
३३. तांत्रिक प्रयोग
३४. दुर्गा सप्तशती
३५. शाक्त-प्रमोद
३६. मिस्टिक इण्डियने पत्रिका
३७. शक्ति परिक्रमा पत्रिका
३८. अनन्त दर्शन पत्रिका
३९. चण्डी पत्रिका
४०. कल्याण (विभिन्न वार्षिक अंक)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ ॐ श्री माँ बगलामुखी देव्यै नमः ॥

द्वापरयुगीन, चमत्कारिक, त्रिशक्ति माता बगलामुखी मन्दिर



यह त्रिशक्ति माता लक्ष्मी, माता सरस्वती तथा बगुलामुखी है। यह मन्दिर उज्जैन से १०० कि.मी. दूर जयपुर (कोटा) रोड पर तहसील नलखेड़ा, जिला शाजापुर (म. प्र.) में लखुन्दर नदी के किनारे (पुराना नाम लक्ष्मी नदी) पर स्थित है। इस मन्दिर की स्थापना महाराज श्री युधिष्ठिरजी ने भगवान श्रीकृष्णजी के निर्देशन पर महाभारत में विजयश्री पाने के लिए की थी। इस मन्दिर में बेल पत्र, चम्पा, सफेद आँकड़ा, आँवला, नीम एवं पीपल के वृक्ष (एक साथ) स्थित हैं, जो माता के साक्षात् स्वरूप होने का प्रमाण है।

मन्दिर के पीछे नदी के किनारे कई समाधियाँ (संत मुनियों की) जीर्ण अवस्था में हैं, जो इस मन्दिर में संत, मुनियों के रहने का प्रमाण है। करीबन ८०-९० साल पूर्व एक संत इस मन्दिर में रहते थे, वे विशेष आयोजनों में तीनों माताओं का साक्षात्कार करवाते थे। वर्तमान में भी माता समय-समय पर अपने भक्तों को चमत्कार दिखाती हैं तथा भक्तगणों की मनोकामनाएँ पूर्ण करती हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



१-ॐ आद्यलक्ष्म्यै नमः, २-ॐ विद्यालक्ष्म्ये नमः, ३-ॐ सौभाग्यलक्ष्म्यै नमः, ४-ॐ अमृतलक्ष्म्यै नमः,
५-ॐ कामलक्ष्म्यै नमः, ६-ॐ सत्यलक्ष्म्यै नमः, ७-ॐ भोगलक्ष्म्यै नमः, ८-ॐ योगलक्ष्म्यै नमः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection